Chap-4

:: चतुर्थ अध्याय ::

: शैलेश मटियानी की नगरीय-परिवेश की कहानियों में नारी के विविध रूप :

:: चतुर्थ अध्याय ::

: शैलेश मटियानी की नगरीय परिवेश की कहानियों में
नारी के विविध रूप :

प्रास्ताविक :

मटियानीजी मूलतः कुमाऊं प्रदेश के हैं । उनका शैशव अल्मोड़ा जिले के बाड़ेछीना गांव में व्यतीत हुआ । यह पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि युवावस्था में वे भागकर मुंबई चले गये थे । उनका यह काल बड़े संघर्ष का रहा । दिल्ली , इलाहाबाद, लखनऊ , मुंबई , कलकत्ता आदि कई शहरों की खाक उन्हें छाननी पड़ी । उनका यह संघर्ष काल तपिश का काल था । भयंकर गरीबी से उनका साक्षात्कार हुआ । धीरज , धर्म , मित्र और नारी की परीक्षा भी हो गई । अनेक प्रकार के अच्छे-बुरे , अच्छे कम , बुरे ज्यादा , अनुभवों से गुजरना हुआ । परंतु इन अनुभवों ने ही उनके लेखक को तपाया , पकाया और मजबूत किया ।

फलतः एक तरफ जहां उनके लेखन में हमें कुमाऊं का ग्राम्यांचल दृष्टिगोचर होता है ; वहां दूसरी तरफ नगरीय परिवेश की भी कहानियां उपलब्ध होती हैं । नगरीय परिवेश में भी दिल्ली , मुंबई आदि महानगरों का परिवेश भी है और इलाहाबाद , लखनऊ आदि का भी । यहां भी इलाहाबाद का परिवेश अधिक मिलता है , क्योंकि लेखक यहां बाद में बरसों-बरस रहे हैं । अल्मोड़ा , नैनीताल आदि पहाड़ी नगरों का परिवेश भी उनकी अनेक कहानियों में प्राप्त होता है । इxx उनकी कई कहानियां ऐसी भी हैं जिनमें हमें ग्राम्य-नगरीय का मिला-जुला परिवेश भी मिलता है ।

प्रस्तुत अध्याय में उनकी नगरीय परिवेश की कहानियों में नारी के जो विभिन्न रूप मिलते हैं उनको वर्गीकृत , विश्लेषित एवं व्याख्यायित करने का उपक्रम रखा है ।

पारसी महिलाएं :

मटियानीजी मुंबई में कई xxx वर्ष रहे , फलतः उनकी कहानियों में कई स्थानों पर पारसी महिलाओं चित्रण प्राप्त होता है । इस प्रकार की कहानियां "मेरी तैंतीस कहानियां " नामक संकलन में प्रायः संग्रहीत हुई हैं । "जिसकी जरूरत नहीं थी " , "शुक बोला " , "विट्ठल" , " एक कोप चा , दो खारी बिस्किट ", "फर्क , बस इतना है " , "प्यास" आदि कहानियों में हमें पारसी महिला-पात्र मिल जाते हैं ।

"जिसकी जरूरत नहीं है " कहानी में एक बूढ़ा पारसी शिशिरकान्त नामक लड़के को अपने बंगले पर ले जाता है । वह एक पारसी सेठ था और प्रिन्सेस स्ट्रीट पर उसका शानदार बंगला

था । पर बंगला जितना ही ज्यादा शानदार था , वह पारसी सेठ उतना ही अधिक जर्जर दिख रहा था । जब शिशिरकान्त सेठ का मझ्झेहx भारी ट्रंक लेकर उसके बंगले पहुंचा । तब एक पारसी महिला उसे बुलाती है । उसे देखती है , बातचीत करती है और सेठ से कहकर उसे नौकरी पर रख लेती है । वह महिला काफी खूबसूरत और जवान थी । शिशिरकान्त उसे सेठ की बेटी समझता था । पर वह बेटी नहीं , सेठ की "डार्लिंग " थी । सेठ बूढ़ा हो चला था । अतः अपनी "डार्लिंग" की हविस पूरी करने वह सुंदर और जवान लड़कों को नौकरी के बहाने ले आता था । पहली बार जब वह पारसी महिला उसे देखती है , उसका वर्णन लेखक ने इन शब्दों में किया है --

"उसने एक अजीब भाव से मेरी ओर देखा । उसकी आँखों में कुछ ऐसा ही भाव था , जैसा हमारे यहाँ हब्बन बूचड़ की आँखों में उस समय आता था , जब वह "हलाल " के लिए आई हुई बकरी के पुट्ठों पर हाथ फेरता था । ... " ।

रात में जब वह सोने जाती है , तब उसे अपने कमरे में आने के लिए कहती है । शिशिर उसके पीछे-पीछे जाता है । उसके बाद का वर्णन लेखक के शब्दों में --

" कपड़ा उतारकर वह बोली -- " इधर आओ । जरा हमेरी बाड़ी का गाँठ खोल दो । ""

" मैं शरम से लौट आया । वह भागती हुई मेरे पीछे आई -- " कहाँ जा रहे हो ? " "

" मैं खामोश रहा ।"

" वह बोली -- "नौकरी नहीं करनी है ? ""

" मैं बोला -- " जी , करनी है । " "

" उसने कहा , कि वह मुझे रईस की तरह रखेगी , बहुत सारा रुपया देगी — और भी बहुत कुछ ।" [2]

पर शिशिर उस पारसी महिला की बात को नहीं मानता है । अतः दूसरे दिन उसे यह कहकर निकाल दिया जाता है कि वहाँ उसकी कोई जरूरत नहीं है ।

"बिट्ठल" कहानी का रुस्तमजी सेठ रात की चम्पी-मालिश के लिए बिट्ठल को रखता है । एक दिन सेठ "मुसाफिर-खाना" देखने जाते हैं , तब सेठानी उसे "दांत" लगा देती है — "बिठवा ! इधर कूं आके , एक कलाक मेरे साथ कूं बैठना रे ! " बिट्ठल सेठ के बारे में सेठानी से जब कहता है कि सेठ को कुछ तकलीफ है । तब सेठानी कहती है — " तकलीफ-वकलीफ कुछ नहीं है । ... अमेरे से बचने की तरकीब है । ... सेठ तो " पावली-कम " हो गया है । " [3]

एक दिन सेठ की लड़की रुस्तमा बिट्ठल को पकड़ लेती है । वह बिट्ठल से कहती है — " पिछले बरस भी पापाजी रत्नागिरी से एक रामा लेके आए थे । वह पापाजी , बड़ी बाई और मेरे को — तीनों को संभालता था । " [4]

पर सब जगह पारसी स्त्रियों का ऐसा ही चित्रण हो , ऐसा भी नहीं है । सामान्य तौर पर लेखक ने पारसी महिलाओं को दयालु और ममतामयी बतायी हैं । xxxxx "प्यास" कहानी का शंकरिया एक पारसी महिला की चेन तोड़ते हुए पकड़ा जाता है , तब लोगों की ओर से , और पुलिस की ओर से उसकी बहुत पिटाई होती है , तब वह पारसी महिला पुलिस को कहती है —

"अभी रहने दो , इन्स्पेक्टर साहिब ! हमेरी चेन अपने को मिल गया है । ज्यास्ती करके छोकरे को भी बहुत मार पड़

गयेली है । अभी काहे को अपने लिए बेकार का लफ्ड़ा करने का और बेचारे छोकरे को भी जेल भेजने का । शरमदार होगा तो पीछे अपने-आपज चोरी-~~××××~~× मवालीगिरी छोड़ देगा । " 5

लेखक ने सेठानियाँ की वासना और हवस का चित्रण वहाँ किया है, जहाँ वे सेठानियाँ भी वासना और हवस का शिकार हुई हैं । बहुत-से पारसी सेठ जिन्दगी भर वासना की पंकिल भूमि में डूबे रहते हैं । बुढ़ापे में भी जवान लड़कियों की जिन्दगी बरबाद करते हैं । थोड़े दिन तो उनके साथ ऐश करते हैं, परन्तु बाद में उनकी उद्दाम वासना-तरंगों को संभालने की कुव्वत उनमें नहीं रह जाती, तब वे नौकरों और "छोकरों" का सहारा लेते हैं ।

गुजराती सेठानियाँ :

मुंबई में काफी गुजराती रहते हैं । बड़े-बड़े व्यापारी सेठ उनमें आते हैं । अतः मटियानीजी की बम्बई की पृष्ठभूमि पर आधारित कहानियों में अनेक स्थानों पर गुजराती सेठानियों का चित्रण हमें प्राप्त होता है ।

"दैट माय फादर बालजी " कहानी में एक विक्षिप्त-से व्यक्ति का प्रलाप है । इस कहानी में सेठ बालजी — वेलजी सेठ का जिक्र आया है । सेठ औरतों के शौकीन हैं । वे पहले एक गुजराती महिला को फंसाकर उससे शादी करते हैं और फिर अनेक स्त्रियों से राग-रंग मानते हैं । यथा —

" दैट माय फादर बालजी .... मैन आफ अबाउट ट्वेंटी सेक्स । डू यु नो हिम ? ... उसकी मोहब्बत की दास्तानें ....

आई मीन टू से लव-स्टोरीज़ ... सो लोंग , सो ग्रेट ....
इतनी लम्बी , इतनी चौड़ी .... मोहब्बत की दास्तानें ...
पहली वाइफ ? गांव रतोड़ा , जिला वड़ोदरा ... बाई कोकिला ...
ए हैण्डसम फ्लावर फ्राम गुजरात प्राविन्स ..." [6]

प्रस्तुत कहानी की कोकिला सेठानी पुरुष-वंचना की शिकार है । बेलजी सेठ उसे फंसाकर बम्बई लाते हैं और फिर दूसरी स्त्रियों से प्रणय-फाग खेलते हैं । अतः ऐसी नारियाँ बाद में गलत रास्तों पर पड़ जाती हैं तो उसमें उनका क्या दोष ? मटियानीजी के उपन्यास "कथा नर्मदाबेन गंगूबाई " की नर्मदाबेन सेठानी एक "सेक्स-मैनियाक" औरत है , पर वह शुरू से ऐसी नहीं थी । वह बहुत ही भावुक किस्म की लड़की थी । साहित्य और कविता से उसका लगाव था । वह अपने कालेज के ह एक युवक से प्रेम करती थी , परन्तु उससे विवाह नहीं कर सकी । विवाह उसका हुआ बम्बई के एक सेठ के साथ , जो उस पर रुपये तो लुटा सकता था , प्रेम नहीं दे सकता था । ऐसी स्त्रियां बाद में "सेक्स-मैनियाक" हो जाती हैं । "बिट्ठल" कहानी की सोमावती झवेरी एक ऐसी ही स्त्री है । यथा —

" बूढ़ा ईरानी (बिट्ठल को) बताता है , कि xxxxx कैसे जवानी के दिनों में करसनदास झवेरी की बीबी सोमावती इसी "पिल-हाउस" में रुक्माबाई के यहाँ आया करती थी । करसनदास के पास लाखों के जवाहिरात थे , पर वे मोती न थे , जो एक पत्नी अपने पति से चाहती है । इन मोतियों की माला गूंथने , सोमावती पिल-हाउस में गेना पठान के पास आया करती थी । ... और बिट्ठल सोमावती की दौलत है — यह बूढ़ा ईरानी दावे के साथ कहता था ।" [7]

"शुक बोला " कहानी में मैना जब पुरुष-जाति पर लांछन लगाती है, तब शुक सेठ पावसजी कावसजी की कहानी सुनाता है, जिसमें सेठानी कल्पना देसाई सेठ पावसजी को रास्ते का भिखारी बना देती है। यह कल्पना देसाई मूलतः अहमदाबाद की थी। सेठ माणिकजी तोरनजी के रंगीले पुत्र मनहर को उल्लू बनाकर, दो साल उसका सोने का चारा चरकर, दादूभाई के साथ बड़ौदा फुर्र हो जाती है। दादूभाई उसे बम्बई के जम्मू दादा को बेच देता है। मुंगरापाड़ा की अपनी झोंपड़ी में रखकर जम्मू दादा उसे खूब मटन-कबाब खिलाते हैं, घी से तर आमलेट खिलाते हैं। कल्पना का यौवन फिर लौट आता है। एक दिन फिल्मों में "एकस्ट्रा सप्लायर" मिनू मिस्त्री की नज़र उस पर पड़ जाती है। वह कल्पना को निम्मी-नरगिस बनाने के ख्वाब दिखाता है। एक दिन वह उसे सेठ पावसजी के यहाँ गले का हार खरीदने ले जाता है और कल्पना पावसजी को ही अपने गलेका हार बनाते हुए पच्चीस हजार का हार मुफ्त में ले आती है। कल्पना देसाई पावसजी को ऐसे नचाती है कि उसे हिरोइन बनाने के चक्कर में वह जवाहिरात का व्यापारी चौपाटी पर "भेल-पूरी" बेचने लगता है। कल्पना की फिल्म "बरबादी" अहमदाबाद में लगती है तो कल्पना के प्रेम में पागल सेठमाणिकजी का लड़का मनहर "कल्पना ! कल्पना " करता हुआ बम्बई आता है और उसकी प्रेम-वंचना के कारण उसका गला घोंटकर कल्पना देसाई की हत्या कर देता है। [8]

मराठी घाटनें :

मटियानीजी की अनेक कहानियों में मराठी बाइयों का वर्णन मिलता है। ये बाइयाँ प्रायः दूसरों के घरों में

नौकरानी का काम करती हैं । "भावना की सत्ता" , "इन्वेस्वामी" , "मौत का सामान" , "दैट माय फादर बालजी" , "बिट्ठल" , "एक कोप या : दो बारी बिस्किट " , " हमेशा" , "सिने-गीतकार", "कीर्तन की धुन" , "प्यास" आदि कहानियों में हमें मराठी घाटनों के पात्र मिल जाते हैं । ये मेहनत-मजदूरी का काम करती हैं । मेहनती और परिश्रमी होती हैं । जिस प्रकार गुजरात में "वाघरी" कौम की औरतें खूब काम करती हैं और उनके आदमी निठल्ले बने घूमते रहते हैं ; ठीक इसी तरह ये औरतें खूब काम करती हैं । अपने मर्दों को खूब प्यार करती हैं । यहाँ तक कि उनके शराब तक का ख्याल रखती हैं । मंजुल भगत की "अनारो" की तरह ये भी सिर्फ इतना चाहती हैं , कि उनका आदमी बना रहे । मर्द का साया भर उनके लिए काफी है ।

"भावना की सत्ता" पत्रशैली में लिखी कहानी है । इस कहानी की सुमन कथा-नायक की ओर आकृष्ट होती है । कथा-नायक एक कवि है और गरीबी में दिन काट रहा है । वह एक केले बेचने-वाली मराठन के घर में रहता है । कथा-नायक जानता है कि सुमन का प्यार वास्तविक नहीं हैं । ऊँची सोसायटी वाली लड़-कियों में प्यार भी एक फैशन होता है । "पयार" उनके लिए "लक्जरी" है । अतः कथा-नायक जब सुमन के प्यार के प्रस्ताव को ठुकरा देता है , तब उसकी असली वास्तविकता सामने आती है । उसके भीतर का ओछापन प्रकट होता है । वह कथा-नायक को xxxxxxxxxxxxx इस संदर्भ में कुछ भला-बुरा लिखती है । उसके जवाब में कथा-नायक जो लिखता है उसमें उस मराठन का चरित्र प्रकट होता है —

" तुमने मेरे ऊपर जो व्यंग कसे हैं , उनसे मुझे इतना ही दुःख हुआ है , कि तुम्हारा हृदय ओछा निकला । ... मैं टेक्सियाँ

धोने का कार्य करता हूं । केले वाली मराठन के घर रहता हूं , यही नहीं , उसकी फूहड़ लड़की से प्यार भी करता हूं । उस फूहड़ लड़की से , जिसे रूप-लावण्य तो खैर प्रकृति ने दिया ही नहीं, सभ्यता-जैसी चीज से भी कोसों दूर रक्खा है । केले की पाटी दोनों हाथों से पकड़े चलती है , तो स्तन ढंकने की भी तमीज नहीं रहती । लोग उसे कनखियों से देखकर मुस्कराते हैं और यह फूहड़-सी आवाज़ लगा देती है — " एक आणे ला दोन । " .... तुम्हारी इस क्षुद्र मनोवृत्ति के लिए क्या कहूं तुम्हें ? जीविका-अर्जन के लिए केले बेचते समय , संभव है , उसे अपने यौवन के प्रति सतर्कता न रहती होगी , पर वह उन तुम जैसी सभ्य कहाने वाली लड़कियों से कहीं सच्चरित्र है , जो रूप-यौवन को व्यवसाय के जैसी चीज समझती हैं ।"[9]

"दैट माय फादर बालजी" कहानी प्रलाप-शैली में लिखी गई है । लेखक ने कहानी के नीचे एक टिप्पणी दी है — "एक विक्षिप्त की आत्मकथा , जो भाई सुरेन्द्र कुमार पाल के साथ , चर्चगेट से बांदरा जाते समय चलती ट्रेन में सुनी थी ।" [10]

इस कहानी में ल`लन उर्फ लालजी नामक एक पागल का अंट-संट प्रलाप दिया गया है । किन्तु प्रलाप के सूत्रों को मिलाने पर एक करुण कहानी हमारे सामने आती है । यह कहानी है गांव थिंगरी , तालुका रेंसी , जिला सतारा की गंगा बाई का । गंगा-बाई मराठी घाटन है । बम्बई में जहां स्टाक-एक्सचेंज का बिल्डींग है , उसके नीचे सत्ताईस साल पहले केले बेचती थी । बहुत सुन्दर थी वह । लोग उसे शान्ता आप्टे की बहन समझते थे । इसी बिल्डींग की सातवीं मंजिल पर सेठ बालजी रहते थे । बालजी सेठ

उसे अपने वाग्जाल में फंसाते हैं । उससे प्रेम का नाटक रचाते हैं । उसे खार में एक मकान दिलाकर रखते हैं । यह बच्चा उसकी निशानी है । बालजी सेठ कुछ दिन तो खर्चा देता है । पर बाद में बन्द कर देता है । तब गंगाबाई कहती है —

"जेव्हां पर्यन्त मला माझ्या-माझ्या मुलगाचा हक नाहीं मिलेल , तेव्हां पर्यन्त मी तुमचा आश्रय सोडणार नाहीं । " 11

और बालजी सेठ अपनी इकसठवीं वर्ष-गांठ पर गंगाबाई को पार्टी में "इनवाइट" करता है । वहां कुछ ऐसा घटित होता है कि गंगाबाई का लड़का पागल हो जाता है । गंगाबाई फ्लोरा फाउण्टेन के पास भीख मांगने लगती है ।

"इल्लैस्वामी" कहानी में एक विधवा मराठी लड़की के आत्माभिमान को लेखक ने चित्रित किया है । वह ग्राण्ट रोड पर स्थित पारसी सेठ होरमसजी के यहां काम करती है । एक दिन उसके सौन्दर्य पर रीझकर होरमसजी अपने प्यार का इजहार करता है और उसे छेड़ने की चेष्टा करता है । वह लड़की सेठ के मुंह पर थूंक कर चली जाती है । होरमसजी पर यह नागवार गुजरता है । वह इल्लैस्वामी नामक दादा को सुपारी देता है कि वह उस लड़की को पकड़कर उसकी सेवा में हाजिर कर दे , क्योंकि उसने कसम खायी थी कि वह अपने थूंक से उसका मुंह गंदा करेगा । 12

इल्लैस्वामी उस लड़की को पकड़ने तो जाता है , परन्तु उसे देखकर वह पहाड़-सा आदमी पिघल जाता है । स्वामी को अपनी बहन येनम्मा की याद आ जाती है और वह उसे अपनी बहन यैनम्मा बना देता है । अपनी खुंखखार आवाज़ में वह

होरमसजी सेठ को कहता है —

"अपनी मां-बहिन का इज्जत तुमकूं बड़ा लगता है, कइसा क्या ? दूसरे का मां-बहिन का इज्जत कुछ नहीं ? हम गरीब लोग का मां-बहिन का इज्जत कुछ नहीं क्या, रे सेठ ?" [13]

इस प्रकार इस कहानी में लेखक ने यह बताया है कि एक गरीब विधवा मराठी बाई को अपनी इज्जत कितनी प्यारी होती है। कोई दूसरी सामान्य स्त्री होती तो उस स्थिति का फायदा उठाते हुए सेठ से पैसे ऐंठने में लग जाती।

"इब्बूमलंग" कहानी की शकुन्तला बाई भी एक मराठी विधवा घाटन है। माहीम और दादर के लोगों के घरों में बरतन-भांडे का काम करके वह अपने बच्चों को पालती है। उसका पति माधोराव लोकल ट्रेन से कटकर मर गया था। उस समय वह दो महीने के पेट से थी। शकुन्तलाबाई को यह चिन्ता थी कि आगे वह अपने काम को कैसे चालू रखपाएगी। और यदि काम नहीं करेगी तो बच्चों को क्या खिलायेगी ? वह हमेशा माधोराव को सट्टा खेलने से रोकती रही, परन्तु इधर जब से उसने बंगालेवाली की मज़ार और चमत्कारी मलंग के बारे में सुना था, उसका मन ललचा रहा था कि मलंग शा की कृपा हो गई तो "एक के बहत्तर" हो जाएंगे और उसका सारा दलिद्दर मिट जायेगा। इस प्रकार अपने बच्चों के भविष्य का विचार करते हुए वह मलंग की मज़ार पर जाती है। इब्बू मलंग शा ने चरस के नशे में अपनी लुंगी ऊपर उठा ली थी। शकुन्तलाबाई को सुलतानी भंगिनवाला किस्सा मालूम था कि मलंग अपनी मौज-मस्ती में संकेतात्मक ढंग से आंकड़ा दे देते हैं। शकुन्तलाबाई तो कृतकृत्य होते हुए अपनी सारी जमा-पूंजी "इक्के-पे-दुग्गी" और "दुग्गी -से- इक्के"

के डबल के आंकड़े पर लगा देती है और दूसरे दिन कोई और ही आंकड़ा आता है ।

तब शकुन्तलाबाई का पुण्यप्रकोप फूट पड़ता है । वह अपने बच्चों को लेकर बंगालेवाली की मज़ार पर पहुंच जाती है और इबादत-हुसैन उर्फ इब्बूमलंग को न कहने की बातें कहती हैं । उसे खूब फटकारती है । उसे यह भी मालूम हो जाता है कि "इब्बू मस्तान" को "इब्बू मलंग" बनाने वाला वहां का कुख्यात दादा नागप्पा है । पर बिलकुल डरती नहीं है , और किसीकी परवाह किए बिना मलंग को बहुत फटकारती है । शकुन्तलाबाई के इस पुण्यप्रकोप के सामने इब्बूमलंग की भी बोलती बन्द हो जाती है । यथा —

" क्यों ? उस समय तो तू बेशरम×बेशरम अपनी लुंगी को अपनी महतारी के लहंगे की तरह फटफटाते हुए ऊपर को उठ रहा था ? और अब "क्यों री , क्यों री " चिल्लाता है ? ठैर , मैंने जो सारे मोहल्ले में नहीं बताया कि यह मलंग चोट्टा बना हुआ पीर है , असल में तो झूठा-लबार चार सौ बीस है । ठैर , मैं तेरी सुलतानी भंगन के साथ की बदफैली का भी भण्डा-फोड़ करूंगी । अरे , ओ मस्तान , कुल बाईस रूपये तो मैंने अपने कुत्ते के पिल्लों का पेट पालने को बचा रखे थे ... अब बना दे मेरे बच्चों के लिए भी यहीं एक मजार और जिन्दा ही दफना दे मुझ कुतिया को यहीं पर । और फिर लुंगी हिला-हिलाकर दे सट्टे के झूठे आंकड़े और दारू-चरस पीकर लिपटा रह सुलतानी भंगन की चूतड़ों से ... हत्त , तेरे लबार हरामजादे की महतारी का ।"[14]

जहां दूसरे सामान्य लोग अंधश्रद्धा या नागप्पा के आतंक से डरते हैं ; वहां शकुन्तलाबाई बेखौफ यह सब कह जाती है । यह

वह नहीं , उसके भीतर बैठी हुई महतारी बोल रही है , उसके भीतर की जगदम्बा बोल रही है । उसके भीतर की एक मेहनती-ईमानदार औरत बोल रही है । और इसलिए जब नागप्पा शकुन्तला को मार देने की धमकी देता है , तब इब्बू मलंग खड़ा हो जाता है और नागप्पा को फटकारते हुए कहता है —

" तू परे हट बे , दोजख के कुत्ते । स्साला आया बड़ी पीर-फकीर की दुआ देने वाला ? तू कौन है अपनी भैन का कटड़ा , मुझे पीर-मलंग बनाने वाला ? ... यह बेचारी महतारी ही ठीक कहती है कि मैं मलंग नहीं चोर-लबार और मक्कार हूँ । .... और तू भी पक्का बदमाश और जालसाज है मादर ... ल्ले , कसाई कुत्ते उस दिन तैंने हरामजादे , मेरी कुतिया की पीठ पर छुरा घुसेड़ दिया था , आज अपनी भैन के कटड़े , मेरे ही घुसेड़ के मुझे यहीं दफना दे । बना दे मेरा भी मजार मेरी कुतिया की बगल में .... " 15

दक्षिण की ××महिलाएँ :

मटियानीजी की कहानियों के रचना-संसार में बम्बई का परिवेश एक बहुत बड़े हिस्से को अपने में समेटता है । मुंबई पंचरंगी शहर है । वहाँ भारत के सभी प्रान्तों के लोग आकर बसे हुए हैं । दक्षिण के हैदराबाद , बेंगलोर , मद्रास (अब चेन्नई) आदि शहरों से कई स्त्रियाँ अपने भाइयों , बापों या मर्दों के साथ यहाँ आकर बसी हुई हैं । "इल्लैस्वामी" कहानी की येनम्मा तथा "प्यास" कहानी की कृष्णाबाई इनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय कही जा सकती हैं ।

येनम्मा इल्लैस्वामी की बहन थी । अपने भाई के लिए भीख मांगते-मांगते चिलचिलाती धूप में उसने दम तोड़ दिया था । बाद में बम्बई आकर इल्लैस्वामी गुण्डा-बदमाश बन जाता है । बड़े-बड़े सेठों की सुपारी लेने लगता है । पर जब भी कोई मासूम - गरीब लड़की को देखता है, उसे अपनी बहन येनम्मा की याद आ जाती है । और तब उस लड़की की वह जी-जान से मदद करता है ।

"प्यास" कहानी की कृष्णाबाई एक हैदराबादी औरत है । उसका पति रामचन्द्रन रेल-दुर्घटना में मर गया था । तब से वह भीख मांगने का काम करती है । उसी सन्दर्भ में उसका परिचय जैकब नामक एक आंग्लभारती से होता है, जो दहीसर और विरार के जंगलों में दारू की भट्ठियां चलवाता है और उस दारू को भिखारिनों के माध्यम से बेचता था । जैकब से उसे एक गोरा-चिट्टा बच्चा हुआ था, जो बाद में मर गया । बच्चे के मरने के बाद कृष्णाबाई जैकब के गिरोह से अलग हो गई, क्योंकि उसे पता चला कि जैकब ने उसके बच्चे को जतन से दफनाने के बदले जंगल में फिंकवा दिया था । तब से वह अलग से भीख मांगने का काम करती है । पर बच्चेवाली भिखारिनों के मुकाबले उसे बहुत कम भीख मिलती है । अतः उसने पांडुरंग मामा से कह रखा था कि कोई बच्चा अगर उसके हाथ में आवे तो वह सबसे पहले उससे ही सौदा कर ले ।[16]

मामा पांडुरंग बच्चों से भीख मंगवाने का "बिजनेस" §१§ करते हैं । कई लड़के उन्होंने इस व्यवसाय में छोड़ रखे हैं । इस व्यवसाय से उन्होंने मकान और बीड़ी का कारखाना भी बनवा लिया है । पहले मामा खुद भीख मांगते थे । बाद में कुछ "सीनियर" होने पर उनकी व्यावसायिक बुद्धि ने यह व्यवसाय सोच निकाला

था और वह काफी चल निकला था । मामा कचरे की टोकरियों में फेंके हुए बच्चों का उठा लाते थे , लावारिस बच्चों को ले आते थे और उनसे अपने "भिखारी-बिजनेस" को चलाते थे । बच्चा बहुत छोटा हो तो किसी भिखारिन को देकर भीख मंगवाते थे । उसके लिए मनगढ़न्त कहानियां बना लेते थे कि किसी बंगाली या कश्मीरी सेठ का बच्चा है । बड़ा होने पर उससे भीख मंगवाते थे । और बड़ा होने पर वह गुण्डा, बदमाश , उठाईगिर , जेबकतरा वगैरह बन जाता था । मामा को फैक्टरी में "बीडी" ही नहीं बनतीं , ऐसे लोग भी बनते हैं ।

पांडुरंग मामा कृष्णाबाई को एक तुरंत का जन्मा हुआ बच्चा लाकर देता है और कहता है — " बाई , नकद पचास की रकम और भानजे का रिश्ता लगा करके इस छोकरे को खरीदा है । सूरत का गोरा और खूबसूरत है । भीख माँगते समय होशियारी से काम लोगी , तो चांदी पिटवा देगा छोकरा । किसी ऊँचे घराने की लक्ष्मी की औलाद मालूम पड़ता है । नाम का सिकन्दर निकलेगा । ... तो बाई , जब तक इस छोकरे से बिजनिस करोगी , एक रूपया रोज लूंगा और अगर तुम्हारी किसी लापरवाही या बीमारी से यह मर गया तो तुम्हें पूरे पचास की रकम एक मुश्त मुझे देनी होगी । " [17]

इस प्रकार कृष्णाबाई बच्चे को भीख के लिए खरीदती तो है , पर उसका दिल तो एक मां का है । वह उसे खूब लाड़-प्यार करती है , अपने सगे बेटे की तरह रखती है और एक दिन उसे बचाने के लिए खुद रेल के नीचे कटकर मर जाती है । कृष्णाबाई ने उसका नाम शंकरिया रखा था । बाद में शंकरिया कभी इस घटना को याद करता

है, तो इसका वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है :—

"उसे यह भी याद नहीं कि जब वह चार वर्षों का हो गया था, तो खेलते-खेलते झोंपड़ी से बाहर रेलवे-लाइन तक पहुंच गया था और उसे बचाने को दौड़ती-दौड़ती कृष्णाबाई उसे रेलवे लाइन से बाहर फेंककर, खुद "लोकल" ट्रेन के नीचे कट गयी xxxx थी।"[18]

<u>मुसलमान महिलाएं :</u>

मटियानीजी का रचना-संसार उनके विशद जीवनानुभवों पर आधारित है, अतः उनकी कहानियों में सभी वर्गों और जातियों के पात्र आते हैं। "मैमूद", "हलाल", "बिट्ठल", "जिसकी जरूरत नहीं थी", "सीने-सीतकार", "हमपेशा" जैसी कहानियों में अनेक स्थानों पर मुसलमान स्त्रियों का आलेखन हुआ है। ये कहानियां प्रायः बम्बई और इलाहाबाद के परिवेश को लेकर लिखी गई हैं।

इन कहानियों में हमें मुसलमान नारी-चरित्र प्रायः तीन रूप में xxxxxxxxxx मिलते हैं : कुछ विशेष नारी चरित्र, मुसलमानी-परिवेश-परिवार में चित्रित सामान्य नारी-चरित्र, मुसलमान वेश्याओं के चरित्र।

"मैमूद" कहानी की जद्दन अपने बकरे मैमूद को बहुत प्यार करती है। उसके लिए दिन-भर मारी-मारी फिरती है। और लोगों से वह जो बातें करती हैं, उनमें भी प्रायः मैमूद का जिक्र तो रहता है। वह अकेले में मैमूद से बातें भी करती रहती है।

वस्तुतः जद्दन बीता हुआ कल है । अपनी युवानी में उन्होंने कुछ अच्छे दिन देखे थे । पर अब परिवार की हालत दिन-ब-दिन खस्ता हो रही थी । निम्न-मध्यवर्गीय मुसलमान परिवारों में जो दिखावे और शान की प्रवृत्ति होती है, उसे यहाँ रेखांकित किया जा सकता है । जद्दन अपने सुनहरे अतीत की जुगाली करती रहती है । जद्दन अपने बकरे मैमूद को जो बहुत प्यार करती है, उसका एक मनोवैज्ञानिक कारण यह भी है ।

जद्दन अपनी हमउम्र रहीमन को कहती है :" इन्सान जब बूढ़ा हो जाता है, तब कोई ऐसा उसे चाहिए, जो उसके "आ" कहने से आए, और "जा" कहने से जाए । दुनिया वालों की दुनिया जाने, सुलेमान की अम्मा । मेरा तो यह एक नामुराद मैमूद ही है, जिस साले को खुल्दाबाद की नबी वाली गली से आवाज़ लगाऊं कि — "मैमूद। मैमूद । मैमूद । " तो चुगद नखासकोने के कूड़ेदाने पर पहुंचा हुआ पीछे पलटता है और "बें-बें" करता वो दौड़ के आता है मेरी तरफ कि तू जान, सगी औलाद क्या आयेगी । बस साला जब कुनबापरस्ती पे निकलता है, तो मेरी क्या, खुदा की भी नहीं सुनेगा । .... तुम जानो, एक ये बेजुबान जानवर और दूसरे मासूम बच्चे — बस, ये दो हैं, जो इन्सान की उम्र, उसके जिस्म, और उसकी खूबसूरती-बदसूरती पे नहीं जाते, बल्कि सिर्फ नेकी-बदी और नफरत-मुहब्बत को पहचानते हैं । हमारे शराफत की बन्नो तो तुम्हारी हजार बार की देखी हुई है । खूबसूरती और नूर में उसके मुकाबले की हाजी लाल मुहम्मद बीडी वालों या शेरवानियों के हियाँ भी मुश्किल से मिलेगी । मगर से ये जान कि मेरा मैमूद उसकी शकल देखते ही मुंह फेरके, पिछाड़ी घुमा देता है । बदगुमान x कैती है, नाकाबिले बर्दाश्त बू मारता है और ये कि "x अम्मां,

हमारे बच्चों को छोड़ देंगी, लेकिन ये बकरा नहीं छूटेगा । ' .. मैं कैती हूं , तेरी कमसीनी और खूबसूरती पे लानत है , लाख पौडर-इत्र छिड़के तू , मेरा मैमूद तेरे कहे पे थूक के नहीं देगा । जानवर और बच्चे इन्सान को चमड़ी नहीं , नियत देखते हैं , नियत ।' [19]

बातों-बातों में रहीमन के मुंह से कहीं यह निकल जाता है कि जद्दन तुम इसे सवा-डेढ़ साल का बताती हो , मगर इसके राने-पुट्ठे देखके कोई तीन से नीचे का नहीं कूतेगा और बस बीस-पचीस सेर से कम गोश्त नहीं निकलेगा इस बकरे में । बस , यह बात सुननी थी कि जद्दन , रहीमन पर बुरी तरह से टूट पड़ती है —

' अरी ओ रहीमन , आग लगे तेरे मूं में । मतलब निकल गया तेरा , तो मेरे मैमूद का गोश्त तौलने बैठ गयी ? तेरा खाविन्द तो बढ़ई है , री , ये कसाइयों की घरवालियों की-सी बातें कहां से सीखी हो ? या खुदा , हया और रहम नाम की चीज इन्सानों में रही ही नहीं । गोश्तखोरों की नज़र और कसाई की छुरी में कोई फर्क थोड़े ना होता है । अरी रहीमन कहे देती हूं — आगे से ऐसी बेहूदी बातें न करना और आइंदे से अपनी बकरी कहीं दूसरी जगह ले जाना । कोई सुसरा पूरे खुल्दा-बाद में मेरा एक मैमूद ही थोड़े ठिका लिए बैठा है ...' [20]

जद्दन अपने बकरे को बहुत चाहती है । उसके बारे में कोई कुछ बोल जाय तो वह उससे झगड़ पड़ती है । पर कुछ लोग उसके बेटे के रिश्ते के लिए आ रहे हैं । घर की माली हालत पतली है , लिहाजा यह तय किया जाता है कि मेहमानों की आगता-

स्वागता के लिए मैमूद को हलाल किया जाए । जद्दन उसका विरोध करती है । परन्तु घर के हालात के सामने उसकी एक नहीं चलती और अन्ततः मैमूद को काट दिया जाता है । उस दिन जद्दन किसीसे बात तक नहीं करती । रूक कर कहीं चली जाती है । गोश्त जद्दन की कमजोरी है । पर उस दिन वह उसे छूती तक नहीं है । जद्दन का कहना था कि ऐसी ही मजबूरी थी तो मैमूद को बेच देते और उन पैसों से कहीं से गोश्त ले आते । उस समय की जद्दन की जो पीड़ा है उससे उसके चरित्र को एक मानवीय-गरिमा प्राप्त होती है ।

वह इस प्रसंग के सन्दर्भ में कहती है : " तुम बेदर्दों से ये भी ना हुआ कि मैं अव्वल दर्जे की गोश्तखोर औरत जब के रही हूं कि "बेटे शहनाज , हमें गोश्त-वोश्त ना देना । " तो इसकी कोई तो वजह होगी ? और जहीर के अब्बा , इन्सान दाढ़ी बढ़ा लेने से पीर नहीं हो जाता । तुम ये मुझे क्या नसीहत दोगे कि सभी बकरों के दो सींग होते हैं ? इतना तो नादीदा भी जानता है । दुनिया में तो सारे इन्सान भी खुदा ने दो सींग वाले बकरे की तरह , दो हाथ - दो पाँव वाले बनाये ? लेकिन औरत तो तभी रांड होती है , जब उसका अपना खसम मरता है ? अम्मां तो तभी अपनी छाती कूटती है , जब उससे उसका अपना बच्चा जुदा होता है ? ... ये मैं भी जानती हूं कि मेरे मैमूद में कोई सुर्खाब के पर नहीं लगे थे , मगर इतना जानती हूं कि मेरी तकलीफ जितनी वह बदनसीब समझता था , न तुम समझोगे न तुम्हारे बेटे ... । समझते होते , तो क्या किसी हकीम ने बताया था कि मेहमानों को इसी बकरे का गोश्त खिलाना और तुम भी भकोसना , नहीं तो नजला-जुकाम हो जायेगा ? जहीर के अब्बा , उसूलों का तुम पे टोटा नहीं , मगर इस वक्त अब हमें बहुत जलील न करो । शहनाज से कहो , उठा ले जाए , नहीं तो फेंक दूंगी उधर । जुबैद

से कह देना , अब पंडत के हियां से सब्जी लाने की भी कोई जरूरत ना रही । मेरा पेट तो तुम लोगों की नसीहतों से ही भर गया ।" 21

"रहमतुल्ला" कहानी भी मुस्लिम परिवेश की कहानी है , अतः उसमें कई मुस्लिम नारी-पात्र मिलते हैं । रहमतुल्ला एक हिन्दू स्त्री — खिमुली , और मुसलमान पुरुष फतेउल्ला की औलाद है । दोनों खुदा के प्यारे हो जाते हैं और रहमतुल्ला यहां-वहां की ठोकरें खाता फिरता है । हर जाति में अच्छे-बुरे लोग होते हैं । मुसलमानों में भी जहां कुछ नेकदिल और रहमदिल औरतें होती हैं , वहां कुछ अव्वल दरजे की पाजी और बेरहम औरतें भी मिलती हैं । "रहमतुल्ला" कहानी की गुलबदन बेगम नाम की ही गुलबदन है । उसके मुंह से तो पत्थर बरसते हैं । छोटे रहमतुल्ला पर उसे तनिक भी रहम नहीं आता । वह रात-दिन उसे कोसती और सताती रहती है । एक बार चने दलने के लिए बिठाती है । रहमतुल्ला ने सवेरे से कुछ खाया नहीं था । अतः एक मुट्ठी चना वह मुंह में भर लेता है कि पेट में कुछ तो पहुंचे । इस पर उसे जोरों की मार और डांट पड़ती है । रात को सबके खा लेने के बाद रहमतुल्ला को भी खाना दिया गया —

" "ले-रे , भर ले तेरा भी लदौड़ा । "

पहले तो खाके बचे हुए टुकड़े मिले , फिर एक पूरी रोटी । रहमतुल्ले ने उसका एक ही कौर बनाया , और फिर , अपनी खामोश आंखों को गुलबदन बेगम के चेहरे पर टिका दिया ।

" हाय अल्ला , हमारे इद्दू के अब्बा ~~मि~~x को भी न-जाने कब अक्ल आएगी । " गुलबदन बेगम ने रोटियों की देगची एक ओर रखते हुए , अपना माथा पीट लिया — " अरे , मेरे मौला । इस दूसरे के पेट है , कि रामढोल । चोरी का माल उड़ा-उड़ा के चौकोर बकस जैसा लग रिया है । सेर-डेढ़-सेर तो चने चबा

गया , ऊपर से एक दरजन के बरोबर रोटियां साफ करके भी मुआं मेरे मुंह पे ऐसी निगा फिरा रिया है , जैसे नोंच के खा जावेगा । अरे , बाप रे तौबा है , मेरी तो तौबा । " 22

गुलबदन हद दरजे की जालिम औरत है । रहम-दया जैसा भाव तो उसे छू भी नहीं गया है । इसी कहानी में रहमतुल्ला की दूसरी मालकिन है — गुलशन । वह गुलबदन जितनी जालिम तो नहीं । पर रहमतुल्ला का उसके घर में रहना उसे भी अच्छा नहीं लगता था । उसके पीछे आर्थिक कारण भी हैं । अतः रहमतुल्ला का मामा उदेराम जब रहमतुल्ला को लेने आता है , तब गुलशन को खुशी ही होती है । वह उदेराम से कहती है —

" "ले जा रे , भैये । आखिर तेरी ही खिमुली दीदी की निशानी है । बेटा भी बिलकुल शहजादे सरिखा है । क्या कहूँ , मेरा दिल तो यही कैता है , जहाँ ये पौन दरजन अपने हैं , एक ये और भी सही । मगर हमारे घर की अंदरूनी-हालत तो या खुदा को ही मालूम है , या मुझे ही । " 23

यहां लेखक ने मुस्लिम स्त्रियों की लाचारदर्जी हालात का एक आयाम यह रखा है कि वे दरजन-पौन दरजन बच्चे जनने के लिए विवश हैं । उनकी गरीबी का एक बड़ा कारण यह भी है ।

"पत्थर" कहानी की गफूरन एक नेकदिल औरत है । वह अपने खाविन्द को खुदा का दरजा देती है और उसके लिए मेहनत-मजदूरी करती है । गफूरन को देखकर मंजुल भगत की "अनारो" सहसा स्मृति में कौंध जाती है । वह आत्मपीड़क [मैसोकिस्ट] किस्म की औरत है । सबकुछ बरदाश्त कर लेगी पर अपने शौहर के

सुख और आराम में किसी किस्म का फरक नहीं आने देगी । अपने शौहर के लिए यह भली औरत अपने बच्चे को साथ लेकर भीख तक मांगने के लिए तैयार हो जाती है । परन्तु गफूरन भली और सीधी औरत है । उसे भिखारियों के लटके नहीं आते । अतः उसे ज्यादा भीख नहीं मिलती । इस बात पर उसका पति रमजानी कहता है कि "कह देती कि इसका बाप मर गया है ?" [24] यह बात गफूरन को नागवार गुजरती है और अपने शौहर को कभी उफ न कहनेवाली गफूरन रमजानी को एक तमाचा जड़ देती है ।

इस कहानी में भी मुसलमान स्त्रियों के बेशुमार गरीब होने के तथ्य को रेखांकित किया गया है । इन कहानियों में निम्न जाति की स्त्रियों के मुसलमान पुरुषों से विवाह कर लेने के भी कुछ उदाहरण मिलते हैं । "रहमतुल्ला" कहानी की खिमुली तथा "गोपुली गफूरन" कहानी की गफूरन वैधव्य के बाद जीवन में किसी पुरुष का आधार खोजने के उपक्रम में मुसलमान बनती हैं । खिमुली तो अपने शौहर फतेउल्ला के साथ काफी खुश नजर आती है, लेकिन गोपुली अपने इस धर्म-परिवर्तन के लिए खुश नहीं है । गोपुली एक शिल्पकारनी थी और उसका पति तांबे की कलशियाँ बनाता था । गोपुली के आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उसके पति का व्यवसाय भी अच्छा चलता था । उसका पति भी कुछ-कुछ उदार था और लोगों के साथ कु गोपुली के हंसी-मजाक और ठिठोलियों को सहजता से लेता था ।

यहाँ एक तथ्य की ओर ध्यान [illegible] दिलाना आवश्यक है कि इस कहानी में लेखक ने कहीं-कहीं संक्षिप्तीकरण भी किया है । "बर्फ की चट्टानें" (बड़ा संस्करण) तथा "पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ" इन दोनों कहानी-संग्रहों में

यह कहानी संग्रहीत है , परन्तु "बर्फ की चट्टानें " में उसे कहीं-कहीं संक्षिप्त किया गया है । पात्रों के नाम तक में परिवर्तन कर दिया गया है । पुरोहित गुरु किरपालदत्त को "रामदत्त" कर दिया है । किरपालदत्त गोपुली पर बुरी तरह से आसक्त हैं और अक्सर उसे ऋषि पाराशर और सत्यवती की कहानी सुनाया करते थे । गोपुली को भी इस बात में आनंद आता था कि ऐसा धर्मी-कर्मी पुरोहित भी उस पर मरता है । गोपुली एक बार गुरु किरपाल -दत्त को पूछती है --

" क्यों हो गुरु ? कलशों की जरूरत है ? मेरे देवराम कह रहे थे कि गुरु से पूछ आना जरा ... "[25]

गोपुली के इस प्रश्न पर गुरु किरपालदत्त जो हरकत करते हैं , उसका वर्णन "पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां" में निम्नलिखित अनुसार है :-

" गोपुली अपनी बात कह भी न पाती थी कि किरपाल गुरु , इधर-उधर देखकर , उसे गलियारे में अपने गोठवाले कमरे में खींच लेते थे और गोपुली के कर्णफल जैसे उरोजों पर हाथ फिराते हुए, बच्चों की तरह फुसफुसा उठते थे -- " गोपु , मुझे तो तेरे कलशों की जरूरत है । " .... छि.... छि ... कहते हुए गोपुली फिर खिलखिला उठती थी । आंचल में से गुरु का हाथ बाहर निकाल देxx देती थी -- " द , तुम तो एकदम बिना अन्नप्राशनी के बच्चे की तरह बेकाबू होकर दूध ढूंढने लग जाते हो गुरु । कोई देख लेगा तो तुमको क्या कहेगा ? अच्छा हो , गुरु , अब मै चलती हूँ । अपने चित्त को ज्यादा चलायमान मत किया करो । ऊपर से कभी बौराणज्यू की नजर पड़ गयी तो ? " बहुरानीजो की सुधि आते ही , किरपाल गुरु एक तरफ हट जाते थे -- " अच्छा गोपुली , कल कोई चार-पांच सेर वजन का कलश ले आना । " "[26]

परन्तु "बर्फ की चट्टानें " में उक्त पूरे प्रसंग को संक्षिप्त कर दिया गया है । यथा —

"गोपुली अपनी बात कह भी न पाती थी कि रामदत्तगुरू इधर-उधर देखकर , उसे अपनी ओर खींचने की कोशिश शुरू कर देते । " 27

कुछ भी हो , बहरहाल गोपुली देवराम के यहाँ मुक्त वातावरण में बहुत प्रसन्न थी । परन्तु देवराम की मृत्यु के उपरांत उसे बेमन से अहमद अली से शादी करनी पड़ती है । अहमद अली जब "फेस्टीवल" लगने की बात करता है , तो गोपुली सोचती है कि इस बहाने अब पुराने लोगों से मिलना होगा , परन्तु वहाँ बुर्का आड़े आता है । शौकत हुसैन की बीबी बशीरन के पूछने पर कि उसे "फेस्टीवल" में मजा आ रहा है कि नहीं , गोपुली कहती है —

"अपने मजे की बात तुम्हीं लोग जानो री । मुझे तो जो कुछ मजा आना था , पिछले साल तक आ चुका । ... अब तो सिर्फ सजा बाकी रह गयी है । " 28

उक्त कहानियों के उपरांत अनेक नगरीय परिवेश की कहानियों में मुसलमान स्त्रियों के चित्र उपलब्ध होते हैं । उनमें लाचारी , गरीबी , बेबसी आदि का चित्रण बहुतायत से उपलब्ध होता है ।

<u>ईसाई महिलाएँ :</u>

मटियानीजी की कहानियों में ईसाई महिलाओं का चित्रण भी मिलता है । "मिसेज ग्रीनवुड " , " कठफोड़वा" ,

"चुनाव" आदि कहानियों में हमें ईसाई महिलाओं के चरित्र उपलब्ध होते हैं ।

मिसेज ग्रीनवुड का मूल नाम तो मिस एण्डरसन है । संस्कार , सौन्दर्य और शिक्षा का त्रिवेणी संगम मिस एण्डरसन में मिलता है । मिरतोला के कृष्णभक्त भाई श्रीकृष्णप्रेम के दर्शन और कैलास यात्रा की लालसा से मिस एण्डरसन अल्मोड़ा आयी थीं । यहाँ ग्रीनवुड काटेज के राबर्ट साहब से कुछ ऐसी माया व्यापी कि साठ साल के राबर्ट साहब और चालीस वर्ष की मिस एण्डरसन सदा-सदा के लिए मिल गये । राबर्ट साहब कहते थे —

" डियर , एक छोटा-सा तुम , एक छोटा-सा हम । बहुत बड़ा बंगला हमको "सूट" नहीं करने सकता । डाइनिंग-रूम के अंदर दो कुर्सी लगाएगा । दोनों जना बैठेगा , काफी पिएगा । बातचीत करेगा । खाना खाएगा । स्लीपिंग-रूम का अन्दर दो चारपाई लगाएगा , सो जाएगा । इस छोटा-सा बंगले के अन्दर सिरफ दो जना रहेगा , सिरफ दो जना । " 29

ग्रीनवुड साहब -- राबर्ट साहब ने "आपरेशन" करवा लिया था , अतः तीसरे के आने की कोई गुंजायश नहीं थी । रोज सवेरे मिसेज ग्रीनवुड नौकर शोबन को जगाने जाती थी । और इसीमें वह फिसलती हैं । एक बार फिसलती हैं तो फिसलती चली जाती हैं । फलतः उस काटेज में तीसरा आता है । " और जब तीसरा आया था , एकदम मासूम बच्चा , तो ग्रीनवुड साहब एक अजीब-सी खामोशी के साथ प्रभु के लोक को चले गए थे ... और मिसेज ग्रीनवुड को वह मासूम बच्चा ग्रीनवुड साहब से भी कहीं ज्यादा बूढ़ा, खूसट लगा था । " 30

मिसेज ग्रीनवुड से एक मानव-सहज गलती तो हो गई । परन्तु बाद में ज़िन्दगी भर उसके लिए पछतावा करती रही । ग्रीनवुड काटेज में दो ही रहे — मिसेज ग्रीनवुड और ग्रीनवुड साहब की आत्मा ।

मिसेज ग्रीनवुड बूढ़ी हो जाती है, पर ग्रीनवुड साहब के समय की चीजों को, उनके कपड़े-सूट, क्रोकरी को, वे उसी प्रकार सहेजकर रखती है । शोबन कई बार साहब के कपड़े मांग चुका है । पर उसे वे डांट देती है । एक बार "डिनर-सेट" में खाने की इच्छा प्रकट करने पर वे उसे दुत्कारते हुए कहती है —

" शोबन, साहब भर भी गया तो हमारा साहब है । तुम ज़िन्दा भी है, तो साहब का नौकर है । अपना औकात से ज्यास्ती मांगेगा, हम नहीं देने सकता । " 31

खीझ और झुंझलाहट के कारण शोबन से जब राइस-प्लेट टूट जाती है, तब वे उसे बुरी तरह से फटकारती है और काटेज से निकाल देती है । इस प्रकार मिसेज ग्रीनवुड नारी-गरिमा और गौरव की रक्षा करने वाला एक महान ईसाई नारी-चरित्र है ।

"झुरमुट" कहानी में भी हमें ईसाई-परिवेश उपलब्ध होता है । यही कहानी अन्यत्र "कठफोड़वा" शीर्षक से भी प्रकाशित हुई है । इस कहानी के धरणीधर उप्रेतीजी सुप्रिया मसी के रूपाकर्षण से मुग्ध होकर अपनी पत्नी तारा पंडितानी को छोड़कर ईसाई धर्म अंगीकार कर लेते हैं । शुरू-शुरू में तो उन्हें बड़ा अच्छा लगता है, परन्तु यौवन के दौर के थमने पर उनके पुराने संस्कार जोर मारते हैं । यह कहानी उन संस्कारों के उहापोह और प्रिया मसी के जीवन की कारुणिकता को उकेरती है ।

कमरे के बाहर मिस्टर डी.डी. मती के नाम की "नेम-प्लेट" लगी हुई है, परन्तु कमरे के अन्दर तो हमेशा धरणीधर उप्रेती ही बैठे हुए रहते हैं। उन्हें लगने लगा है कि जिन ओढ़े हुए संस्कारों के कारण उन्होंने तारा पंडितानी को अपने लिए अनुपयुक्त और हीन पाया था, उन्हीं के कारण अब खुद अपने को सुप्रिया मती के लिए फालतू अनुभव करने लगे हैं। धरणीधर पंडित का मनस्ताप, कठफोड़वा पक्षी की चोंच की तरह, उनके शिखाहीन मस्तक की पोली सतह को कुटकुटाता रहता है। [32]

सुप्रिया धरणीधर की छात्रा थी। सुन्दर, स्मार्ट और फर्राटेदार अंग्रेजी बोलनेवाली सुप्रिया धीरे-धीरे धरणीधर के मन का कब्जा ले लेती है। उनका ईसाई होना, ईसा के खातिर नहीं, सुप्रिया के कारण हुआ। अपना आत्म-विश्लेषण करते हुए डी.डी. कहते हैं :—

" मैं कुछ नहीं जानता, कब, कैसे शुरुआत हो गई। जैसे कोई कब्र में का मुर्दा उठ खड़ा हुआ हो — जैसे कोई पूर्व जन्म का प्रेत जागता गया और जो कर्म-काण्ड-मन्त्र पाठ बाढ़ में बह गये थे, जाने फिर कब अपनी जगह वापस आते चले गये। कब प्रभु ईसा की सुभाषितों की जगह दुर्गा सप्तशती की " या देवी सर्वभूतेषु" में चिर शान्ति अनुभव करने लगा — कब तारा को त्यागने की बात ने "पापोहं पापकर्मोहं" की ग्लानि में ला पटका — कुछ नहीं जानता, सुप्रिया! तुम्हारी तरफ को एक बाढ़ में बहा था — दूसरी एक बाढ़ आई, तुमसे पीछे हटना शुरू होता गया। आय यम ए गिल्टी परसन, सुप्रिया! आई हेव डिसीव्ड बोथ आफ यू सिंसियर वूमेन! क्रिश्चियनिटी हैज

आल्सो लुज्ड इट्स मीनिंग फार मी ।" [33]

धरणीधर सुप्रिया से कहता है — " मैं जितना कृतज्ञ तारा के प्रति हूं , उतना ही तुम्हारे प्रति भी । दोनों से ही मैंने बहुत-से सुख पाए । तुम दोनों का उतना ही अपराधी भी हूं । तारा बच्चों के पिता के दायित्व को भी खुद ही निबाहते हुए , मेरे अपराध क्षमा करती गई है । तुम भी मुझे क्षमा कर सकती हो , अपने लिए किसी अनुकूल को चुनकर । ऐसी स्थिति में भी मुझसे बड़ी ही रहोगी , सोनी , क्योंकि तुम अपनी ही दृष्टि में नहीं गिरी हो । सच पूछो तो मैं अब संन्यास ले लेना चाहता , सोनी । अब अपनी व्यर्थता को और ज्यादा ढोया नहीं जाता । " [34]

ठीक इसी बिन्दु पर हमें सुप्रिया मती के आत्म-वैभव का पता चलता है । धरणीधर के प्रति अत्यन्त कोमल और संवेदनशील होते हुए वह कहती हैं — " डी.डी. , छिच्छी , तुम औरतों की तरह रोते क्यों हो । मैं कल से मिस्टर रंधावा के घर नहीं जाऊंगी । मैं कल से तुम्हें कोई ऐसी शिकायत नहीं होने दूंगी , बस ? कहो , तो यह नौकरी छोड़ दूं ? तुमने आज तक चुप रहकर और अपनी तकलीफों को खुद ही पीकर , मुझे भी तो बहुत लापरवाह बना दिया , डी.डी. । प्लीज , एक्सक्यूज मी । " [35]

"चुनाव" कहानी में लेखक ने धर्म-परिवर्तन के आयाम को चिन्हित किया है । पंडित कृष्णानंद कमला शिल्पकारनी को चाहते हैं , परन्तु हिन्दू धर्म में रहते हुए वे उससे विवाह नहीं कर सकते । फलतः वे कमला को लेकर शहर भाग जाते हैं और ईसाई हो जाते हैं । वहां उन्हें चपरासी की नौकरी भी मिल जाती है । कमला शिल्पकारनी अब कैथरिन या क्रिस्टी हो जाती है । कमला बहुत

सुन्दर थी । अब वह उन्मुक्त वातावरण में रहने लगती है । पादरी साहब के भतीजे विलसन चौहान के साथ टेनिस खेलती है । पादरी साहब भी उसे अपने भतीजे के लिए चुन लेते हैं और कृष्णानंद को कोरा उपदेश देते हैं — " आत्मा के अनुसार आचरण की पूरी आजादी देना ही सच्चा मनुष्य धर्म है । धर्म इस बात की पूरी-पूरी आजादी देता है कि औरत अपने लिए अनुपयुक्त प्रेमी या पति को तलाक देकर , उपयुक्त और सही प्रेमी या पति का चुनाव कर ले । " 36

कृष्णानंद को फादर की ऐसी बातों से वितृष्णा होने लगती है । वह फादर को कहना चाहता है कि प्रभु ने नहीं , बल्कि उसने ही अपने लिए उसको चुना था , अपना नौकर बनाने के लिए । और कमला को भी उसने ही चुना था , अपने भतीजे के लिए । अतः अन्त में वह ~~xxxxx~~ आत्महत्या कर लेता है । अतः यहां कैथरिन के रूप में हमें नारी-वंचना का उदाहरण मिलता है । कैथरिन के अलावा यहां मिसेज गोम्स जैसे नारी-पात्र भी मिलते हैं ।

<u>भिखारिनें :</u>

समाज के निम्नतम तबके के लोगों से लेखक का जीवन्त संपर्क रहा है , अतः उनकी कहानियों में कोढ़ी , भिखारी , चोर-उचक्के , मवाली , औरतों के दलाल (भडुए) जैसे पात्र और उनसे सम्बद्ध नारी-पात्र आते हैं ।

उक्त निम्नतम तबके के नारी-पात्रों में भिखारियों के चरित्र भी यत्र-तत्र उपलब्ध होते हैं । "दो दुःखों का एक सुख " , "प्यास" , "भय" , "मिट्टी" , "इब्बू मलंग" , " हैट माय

"दो दुखों का एक सुख" की मृदुला कानी अल्मोड़ा के मंदिरों में भीख माँगती है ।वह अंधे सूरदास और करमिया कोढ़ी के साथ रहती है । अपनी परिस्थितियों के कारण वह इन दोनों के साथ रहने के लिए विवश है । साथ रहते-रहते उन दोनों के लिए कुछ मोह-माया भी हो जाती है । मृदुला को लेकर इन दोनों में कुछ स्पर्द्धा भाव भी है । सूरदास के आँखें नहीं है , अतः करमिया भजन गाते हुए उसे सुनाने के लिए गाता है — "अँखियन देखा जोबना दिल में लागी आग , रे रामा । " [37] जब सूरदास यह सुनता है , तो वह आगे जोड़ लगाता है — " बन में लागी आग रे रामा , बन में लागी आग । कोरी अँखियन क्या करे , जाके फूटे भाग । अंग-अंग सब गल गए , ऐसी लागी आग । ... ऐसी लागी आग रे रामा ... " [38]

जब मृदुला को गर्भ रहता है , तब भी ये लोग यही सोचते हैं कि बच्चा किसका और कैसा होगा : सूरदास सोचता है कि बच्चा अंधा होगा और करमिया सोचता है कि वह कोढ़ी होगा । ~~पंडिताइन~~ दाई कहती है — " भगवान की माया कौन जान सका । कोढ़ी-अंधों की औलाद और दीये-जैसी जोत देती आँखें । गोरा-चिट्टा रंग । अच्छा हुआ कानी पर ही गया बच्चा । अब जरा दस-पाँच दिन इसके खाने-पीने का जतन रखना पंडिताइन के यहाँ से कुछ दलिया-हलवा बनवा लाना । बड़ी दयावान औरत है । कानी के भजन बहुत सुने हैं उसने , अब भोजन की बारी है । " [39]

"प्यास" कहानी का परिवेश तो पूर्णतया भिखारियों और मवालियों का ही परिवेश है । महानगरी बम्बई में पलित ज़िन्दगी जीने वाले लोगों का चित्रण लेखक ने मानवीय संवेदना

के साथ किया है । इस कहानी के मामा पांडुरंग तथा जेकब भीख मांगने के काम को बाकायदा एक व्यवसाय का रूप दे देते हैं । मामा पांडुरंग ने तो इस व्यवसाय से एक पक्का मकान तथा बीड़ी का कारखाना भी बनवा लिया है । जेकब दहीसर और विरार के जंगलों में दारू की भट्टियाँ चलवाता है और उस दारू को ज्यादातर भिखारिनों के माध्यम से बिकवाता है ।

प्रस्तुत कहानी में कृष्णाबाई और ताराबाई नामक दो भिखारिनों के जीवन को लेखक ने चित्रित किया है । कृष्णाबाई का पति रामचन्द्रन रेल-दुर्घटना में मारा गया था , अतः उसे मजबूरन भिखारिन औरतों की शरण लेनी पड़ी थी । भिखारिनों के इस गिरोह से जेकब दारू बिकवाता था , लेकिन कृष्णाबाई बच्चे के मरने के बाद उस गिरोह से अलग हो गई थी , क्योंकि उसे मालूम हो जाता है कि जेकब ने उसके बच्चे को जतन से दफनाने की जगह , कहीं जंगल में फिंकवा दिया था । [40]

तबसे कृष्णाबाई अलग से भीख मांगकर अपना गुजारा करती है , लेकिन बच्चों वाली भिखारिनों के मुकाबले में उसे बहुत कम भीख मिलती थी । अतः उसने पांडुरंग मामा को एक बच्चे के लिए कह रखा था । मामा अनाथाश्रम से एक बच्चा ले आता है और उसे कृष्णाबाई से बेच देता है । कृष्णाबाई भिखारन है और भीख मांगने के लिए ही बच्चा खरीदती है , पर उसका दिल तो एक महतारी का है । वह उस बच्चे को खूब लाड़-प्यार से रखती है । उसे बचाने के लिए वह खुद रेल से कटकर मर जाती है । (41)

तब मामा पांडुरंग उस बालक को — जिसका नाम शंकरिया है — ताराबाई को दे देता है, ताकि ताराबाई का दारू का पूरा-पूरा खर्चा सिर्फ वही छोकरा निकाल ले। [42] ताराबाई मामा की रखैल है और भीख के व्यापार में मामा की सहायता करती है। ताराबाई उन दिनों खुद शंकरिया को लेकर भीख माँगने निकलती थी। ताराबाई चाहे भिखारिन है, एक गिरी हुई औरत है, परंतु उसके भीतर भी एक महतारी का दिल है। अतः वह कभी-कभी शंकरिया को लाड़ करती है। इस संदर्भ में मामा पांडुरंग ताराबाई से कहता है — " अरे, तू ही रांड तो अपनी बगल में सुलाके रखती है, इस हरामजादे को। खा जाएगा यह तुझे, कृष्णाबाई की तरह ही। " [43]

"मिट्टी" कहानी की गनेशी भी नसीबों की मारी एक बेबस भिखारिन है। वह पुरुष-वंचना की शिकार नारी है। जवानी में कभी सुंदर भी रही होगी। तबकई पुरुषों ने उससे छल किया। शादी करके बीच में से छोड़ गये। पिछले कई वर्षों से अपने दो बच्चों को पालने-पोसने के लिए वह भिखारिन का काम कर रही है। वह भीख माँगने के लिए किसी कोढ़ी का साथ पकड़ती है। भीख के पैसों में उनकी बराबर-बराबर की हिस्सेदारी होती है। वह कोढ़ी की गाड़ी को ढोती है, उसकी देख-भाल करती है, सेवा-टहल भी करती है, और इस प्रकार अपने बच्चों के लिए दो पैसे भी कमा लेती है। उसे अपने इस व्यवसाय से घिन आती है, पर दूसरा चारा भी क्या है ? वह लालमन नामक कोढ़ी को संभालती है। इसके पहले किसी और कोढ़ी को संभालती थी। लालमन की हालत अच्छी नहीं है। वह कभी भी लुढ़क सकता है। "लालमन की मृत्यु की कल्पना करना, गनेशी के लिए, अपने-आपको ही डराना है। सत्रह-अठारह वर्षों की फजीहतों से भरी जिन्दगी के बाद, अब थोड़ी-सी राहत मिली है। चार-

पांच सौ भी लालमन से लुढ़कने से पहले किसी तरह जमा हो जाते तो एक बार फिर से कहीं पान-बीड़ी की गुमटी लगाने की कोशिश करती । " 44

लालमन चटोर है । उसे मीठा खाने की चाट पड़ गई है । दस्त हो गए हैं । बार-बार जाना पड़ता है । उसकी साफ-सफाई भी गनेशी को ही करनी पड़ती है । अतः दोनों में कई बार नोंक-झोंक भी हो जाती है । दस्त की दवाई लेने गनेशी डाक्टर बाबू के यहां जाती है । वहां कहीं वह "डायाबिटीज़ " के बारे में सुन ममx लेती है , अतः वह लालमन से कहती है कि डाक्टरबाबू उसे "डायाबिटीज" की बीमारी बता रहे थे । यह सुनते ही लालमन घबड़ा जाता है , और आगे से जलेबी नहीं खाने की कसम खाता है । उस समय गनेशी कहती है —

" बस , तू तो जरा में जी छोटा कर लेता है । गनेसी कोई मर थोड़े गई । जिनको खसम करके जाना , बिना मरे ही राँड़ बनाकर छोड़ गये । सती तो मुझे , झूठ क्यों बोलूं , तेरे साथ भी नहीं होना । अपने ये पिल्ले संभालने हैं । ... लेकिन जब तक जिन्दा हूं , तुझे लावारिस नहीं मरने दूंगी । "45

जब लालमन बहुत भावुक हो उठता है , तब उसे ढाढस बंधाते हुए गनेशी कहती है — " और सुन , लालमन , अभी ऐसी कौन-सी लाइलाज हालत में तेरी बीमारी पहुंच गई । एक-दो जलेबी दहीं के साथ खा लिया करना । " 46

इस प्रकार हम यहां देखते हैं कि गनेशी एक भिखारिन है , परंतु उसका हृदय एक महतारी का है । गनेशी जैसे व्यक्ति को

सेवा वह अपने आदमी की तरह करती है । वह उसका आदमी भी है और बच्चा भी ।

"भय" कहानी का नायक सीताराम नामक एक शख्स की लाश ले आता है । इसी सीताराम के साथ वह कभी उठता-बैठता था । लाश की प्राप्ति के बाद वह अपने किसी दूर के रिश्तेदार ननकू की औरत और बच्चों को बुला लाता है , ताकि उनके रोने पर लोगों से धर्मx धर्म के नाम पर चन्दा उगाहा जा सकता है । ननकू की औरत बुक्का मारके और छाती पीट-पीट कर रोती है ।

"इल्लेस्वामी" कहानी की xxxxx यनम्मा अपने छोटे भाई तथा अपना पेट भरने के लिए भिखारी का पेशा अपनाती है और बैंगलोर के मंदिर के सामने भीख- मांगते-मांगते ही दम तोड़ देती है ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि मटियानीजी ने अपनी कहानियों में भिखारिनों का जो चित्रण किया है इसमें मानवीय-संवेदना का संस्पर्श मिलता है । इनमें भी मानवता का दीया कहीं टिमटिमाता हुआ नज़र आता है ।

वेश्याएं :

मटियानीजी ने बम्बई में जो जीवन बिताया था , वह निहायत समाज के निम्न तबके के लोगों के साथ था । अतः उनकी कहानियों के रचना-संसार में वेश्याओं का चित्रण स्वाभाविक रूप से मिलता है ।

मटियानीजी की ये कहानियाँ प्रायः बम्बई के परिवेश पर आधृत है और "मेरी तैंतीस कहानियाँ" में संकलित हुई हैं ।

"इब्लैस्वामी" , "जिसकी जरूरत नहीं थी" , "चिथड़े" , "शुक बोला " , " दैट माय फादर वेलजी" , "विट्ठल" , "एक कोप था : दो खारी बिस्किट " , "हमपेशा" , "बत्तीस दाँतों को टकराने वाला सेब " , "भय" , "इब्बू मलंग" , "प्यास" प्रभृति कहानियों में हमें वेश्या-जीवन का चित्रण मिलता है ।

"इब्लैस्वामी" कहानी का इब्लैस्वामी बम्बई का एक दादा है । वह आयशाबाई नामक एक वेश्या से प्यार करता है । स्वामी जब^जब^ जीवन-मृत्यु के बीच की भयावह स्थितियों से गुजरता है , तब-तब खूब दारू पी के , मदहोश होकर , फारस रोड़ की आयशा बाई की बाँहों में सिमट जाता है । आयशाबाई वेश्या है , पर ईमानदार है । एक बार स्वामी जब उससे पूछता है कि आयशाबाई "तुम हमकूँ नफ़रत की निगाह से देखता है ? "[47] तब वह कहती है — "नहीं स्वामी ? तुमसे नफ़रत क्यों करूँगी ? इन पाँच वर्षों में जितना पैसा तुमसे पाया है , किसी और से नहीं । मगर पैसा और हविश एक चीज है , मुहब्बत दूसरी । बिलकुल दूसरी×बेबx चीज , स्वामी ! "[48] इब्लैस्वामी दारू के नशे में था । वह चाहती तो उसके सामने प्यार का नाटक कर सकती थी । पर वह ऐसा नहीं करती । यहाँ इस तथ्य पर विश्वास करना पड़ता है कि इन गिरे हुए व्यवसायों में पड़ी औरतों का अपना एक निजी नीतिशास्त्र (एथिक्स) होता है ।

"जिसकी जरूरत नहीं थी " कहानी के नायक शिशिर को पहाड़ का एक शहर में रहने वाला उसका बचपन का साथी

बरगला के ले आता है । उसने शिशिर के सामने बम्बई का एक खूबसूरत चित्र रखते हुए कहा था -- " जहाँ दिल की घड़ियाँ रात के बारह-बारह बजे तक टिकटिक करती रहती हैं । जहाँ हर खूबसूरत शाम के ढलते ही , खिड़कियों में इन्तजार के रेशमी परदे लटक जाते हैं — ठीक उसी तरह , जैसे फागुन की किसी रूपहली शाम को हमारा सरसों का खेत पीले-पीले फूलों की चुन्दरी ओढ़ लेता था । " 49

पर बम्बई आने पर शिशिर के सामने बम्बई की भयावह और बिभत्स वास्तविकता सामने आती है । इस कहानी में हमें वेश्या-जीवन का एक दूसरा आयाम मिलता है । यहाँ कुछ अमीर लोग अपनी हविश की पूर्ति के लिए "पुरुष-वेश्या" [मेल-प्रोस्टि-ट्यूट] का इस्तेमाल करते हैं । प्रस्तुत कहानी में एक बूढ़ा पारसी सेठ xxx जो अपनी औरत को संतुष्ट नहीं कर सकता , उसके लिए शिशिर को नौकर बनाकर ले आता है । जब शिशिर उस कार्य के लिए तैयार नहीं होता है , तब उसको कह दिया जाता है — "हमको तुम्हारा जरूरत नहीं । " 50

"चिथड़े" कहानी में भी गेंदी नामक गाँव के एक युवक को पाँडु नामक व्यक्ति बरगला कर बम्बई ले आता है और फिर उसके पैसे मारकर चला xxxxx जाता है । गेंदी की बड़ी खराब हालत हो जाती है । वह चाँदी की करधनी बेचकर किसी तरह अपने गाँव पहुँचता है । इसका चित्रण लेखक ने इन शब्दों में किया है —

" चाँदी की करधनी बेचकर , बोरीबन्दर को लौटते समय , गेंदी ने फाकलैण्ड रोड की उन खिड़कियों पर नज़र डाली

जहाँ इन्सान कहाने वालों की माँ-बहिनें पावडर-लिपिस्टिक की भद्दी परतों से चेहरे को ढके हुए , सरे-बाजार नारीत्व का सौदा करती हैं । ... और जब गेंदी बोरीबन्दर से कोल्हापुर की गाड़ी में बैठा , तो उसने ट्रेन की अधखुली खिड़की से — विरक्ति और घृणा के साथ — फिर उस बम्बई को देखना चाहा , जहाँ किसी ढलती शाम को , हर खिड़की पर , इन्तजार का रेशमी पर्दा लटक जाता है । .... लेकिन , आज गेंदी की कल्पना के ये रेशमी-पर्दे उन चिथड़ों में बदल गए , जिनको बोरीबन्दर पर मानवों की पतित जाति ढोती रहती है — भूखी और नंगी ।" 51

"बिट्ठल" कहानी में रुक्माबाई , जसोदाबाई , सावित्री-बाई आदि वेश्याओं का जिक्र आता है । यहाँ वेश्या-जीवन का एक अन्य पहलू भी सामने आता है । रुक्माबाई पिल-हाउस में वेश्यालय चलाती है । करसनदास झवेरी की बीबी सोमावती यहाँ अपनी वासनापूर्ति हेतु चोरी-छिपे आती है और गना पठान से अपनी यौनेच्छा संतुष्ठ करती है । 52

"एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " कहानी तो वेश्या-जीवन पर ही आधारित है । बम्बई में अपना पेट पालने के लिए छोटी-मोटी रकम पर अपने शरीर का सौदा करने वाली वेश्याओं को लेकर यह कहानी लिखी गई है । ये औरतें बम्बई के फुटपाथों पर घूमती रहती हैं । इसके संदर्भ में लेखक लिखते हैं :—

"पहली दस तक जिन दिनों सरकारी खजाना बंटता है — फुटपाली वाली बाइयाँ , जो बावजूद हजार तकलीफों के , अपनी जवानी सलामत रख सकी हैं — रेलवे पुलिसों , टिकट चेकरों ,

और गवर्नमेण्ट आफिसों में काम करने वाले नटुआ क्लर्कों की जिन्दगी आबाद करती हैं । फुटपाती वाली बाइयों के लिए यह मौसम बहार का होता है । बहार के इस मौसम में, वे एलेक्जण्डा से लेकर एक्सलसियर तक के सिनेमा-घरों में बाबुओं की बगल में बैठ, बत्तियां गुल होते ही हिन्दुस्तानी मजनुओं को रोमियो-जुलियट मार्का विलायती-चोंचे देती हैं । ईरानी पारसी होटलों में मटन-चाप, कोफ्ता और बिरयानी दबाती हैं । "[53]

इस कहानी में शरीर का यह व्यापार दोतरफा है यह बताया गया है । फुटपाती वाली बाइयां अपना तथा अपने बच्चों का पेट पालने के लिए ग्राहक ढूंढती रहती हैं, तो दूसरी तरफ कारों और बंगलों में रहनेवाली सेठानियां और अभिजातवर्गीय स्त्रियां अपनी वासनापूर्ति के लिए नये-नये शिकार खोजती फिरती हैं । कहानी का नायक रामन्ना फुटपाती वाली बाइयों को "मायूसी" कहता है और कारवाली बाइयों को "फण्टूसी" ।[54] इसी तरह प्यार के करण्ट को भी वह ए.सी. और डी.सी. में बांटता है । "फण्टूसी" के प्यार को वह उल्फत कहता है, और "मायूसी" के प्यार को मोहब्बत । उल्फत उसकी जिन्दगी का टेस्ट है, मज़ा है । मोहब्बत उसके जिगर का दर्द है, उसके जीने का आधार है ।[55]

प्रस्तुत कहानी में नसीम नामक एक वेश्या-लड़की के जीवन को लेखक ने दर्द के साथ चित्रित किया है । नसीम की मां यू.पी. के बस्ती जिला की थी और बकोल मां के उसका बाप जम्मू दादा था, जिससे वह नफरत करती है । नसीम तीन दिन से भूखी है और जम्मू दादा उसे शहेन्शा होटल में बिरयानी-कोफ्ता

खिलाने की बात करता है , पर वह उसके साथ नहीं जाती । वह रामन्ना के पास जाती है , पर रामन्ना के पास उस दिन पैसे नहीं है , केवल एक "चौली" { दुअन्नी } है । वह नसीम को दुअन्नी देकर कहता है — " ले तू पातल भाजी और पाव खा लेना ।" पर नसीम कहती है — " जब नहीं है पैसा , कोई बात नहीं । ... दिन कट गया , रात भी कट जाएगी । आज तुम मेरे साथ सोना , मेरी भूख खुद चली जाएगी । मुहब्बत में बड़ी ताकत होती है । " 56 नसीम तीन दिन से भूखी है , पर दुअन्नी में "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " खाने के लिए वह रामन्ना को भी कहती है । एक चाय और बिस्किट से संतोष कर वह रामन्ना को प्यार करने के लिए कहती है , पर रामन्ना को अचानक अपनी बहन करावा याद आ जाती है । वह नसीम में "करावा" को देखता है और नसीम को अपनी बहन बना लेता है —

"हमेरा जैसा डैमिश लोग होने से ही माँ-बहन का अस्मत कोई वैल्यू , कोई कीमत नहीं रखने को । एक कोप चा , दो खारी बिस्किट के वास्ते जिसम का सौदा होने को । थू है हमेरे पर ... नस्सू , हमेरे को माफ करना । बोलो , हम तुम्हेरा भाई , तुम हमेरा सिस्टर ... हमेरा करावा । " 57

" बत्तीस दांतों को टकरानेवाला पहाड़ी सेब " कहानी में प्यारे बिहारी को पहाड़ी औरतों की खूबसूरती की बातें बताकर ~~मिमिलहमx~~ नैनीताल ले जाता है । प्यारे ने बिहारी के आगे जो बातें रखी थीं , उससे तो ऐसा लगता है कि जैसे पहाड़ों में औरतें प्यार करने के लिए बैठी हुई हैं । वहां पर बिहारी को कुछ पेशेवर छुकरियानियाँ मिलती हैं जो पैसे लेकर शरीर का सौदा करती हैं , " जिनकी रूप-यौवन की सुनाई

पेशे की मजबूरियाँ कभी का पाट चुकी थीं । " 58

"इब्बू मलंग " कहानी के इबादत हुसैन या इब्बू मलंगx मस्तान को वेश्यागमन के कारण सिफलिस की बीमारी होती है । एक बार वह कमाठीपुरा की सुन्दरीबाई के पास जाता है । बाद में उसे पता चलता है कि यह सुन्दरीबाई उसकी चचाजाद बहन सईदन थी । मस्तान की बीमारी सईदन को लग जाती है और वह उसीमें गुजर जाती है । तब से मस्तान ने किसी वेश्या के पास न जाने की "तौबा" को तोड़ा नहीं है । 59

सिफलिस के इलाजx इलाज के लिए काबुलेवाला हकीम उसे पशु-मैथुन का नुस्खा बताता है, तब मस्तान कहता है — " तौबा, तौबा, मौलाना ! कल का झड़ने वाला ससुरा, आज की सड़-गल के झड़ जाए, मगर बेजुबान इन्सान की तोहमत तो ले ही चुका हूं, अब बेजुबान जानवरों की बददुआएं नहीं लूंगा, मेरे बुजुर्ग ! हियां तो ससुरी इस कमीनी जिन्दगी में यही एक सबक सीखा हैx कि जब इबादत हुसैन को हव्वा की बेटी जिन्दगी नहीं बख्श सकी, उसे गधी और कुतिया क्या बख्शेगी ? " 60

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में वेश्या-जीवन का यह दर्दनाक पहलू भी उजागर हुआ है कि उनके पास जो ग्राहक आते हैं वे कई बार जानलेवा और तकलीफदेह बीमारियों को लेकर आते हैं । इन बीमारियों के कारण बड़ी ही दर्दनाक स्थिति में उनकी मृत्यु होती है । इलाज के लिए भी उनके पास पैसे नहीं होते । शैलेश मटियानी की जो कहानियाँ हमें प्राप्त होती हैं उनके रचनाकाल तक "एइड्स" की बीमारी का कुछ अता-पता नहीं था । अतः उसका कोई जिक्र यहां नहीं है । इस बीमारी का भी खतरा वेश्याओं पर मंडराने लगा है । जहां यह बीमारी पुरुषों को लग सकती है, वहां वेश्याएं भी इसका शिकार हो सकती हैं ।

रखिताएँ :

सामान्य भाषा में इसे "रखैल" कहा जाता है । बम्बई जैसे महानगरों में बड़े-बड़े सेठ , नेता और दादा लोग अपनी वासना-पूर्ति के लिए मजबूर और लाचार स्त्रियों को अपनी रखैल बनाकर रखते हैं । कई बार कुछ सुन्दर और नव-यौवना लड़कियाँ फिल्म में हीरोइन बनने के मोह में बम्बई आती हैं और दलालों के चक्कर में फंसकर वेश्या या रखैल बन जाती हैं ।

"दैट माय फादर वेलजी" कहानी के नायक की माँ गंगाबाई सतारा जिला के थिंगरी गांव की है । बम्बई में स्टोक-एक्सचेंज के पास केले-मौसम्मी बेचती थी । वह बहुत ही सुन्दर थी । लोग उसे शान्ता आप्टे की बहिन समझते थे । वालजी सेठ को वह भा जाती है , अतः दार में एक फ्लेट देकर उसे रखैल बनाकर रखता है । सेठ वालजी की प्रथम पत्नी गुजरात के बड़ौदा जिले के रतौड़ा गांव की थी । आफिस की लेडी क्रिस्ताना से भी सेठ के संबंध हैं । क्रिस्टाना की बहिन निवेदा को भी सेठ वालजी अपनी रखैल बनाकर रखते हैं । "शुक बोला" कहानी की कल्पना देसाई पहले जम्मू दादा की रखैल बनती है । फिर पावसजी कावसजी एण्ड सन्स के पावसजी सेठ के यहाँ रहती है । फिल्म में हीरोइन बनने के चक्कर में सेठ पावसजी को तो वह बरबाद करती ही है , एक फिल्म-डायरेक्टर की रखैल बनना भी स्वीकार करती है । "लीक" कहानी के ठेकेदार ठाकुर गोपालसिंह पारबती नामक एक गुमराह स्त्री को अपनी रखैल बना-कर काठगोदाम में रखते हैं । "शरण्य की ओर" कहानी की रामकली यों तो बसंतलाल नामक व्यक्ति की ब्याहता है , परन्तु शुरू से ही भौतिक-संपन्न संपन्नता की ओरx और उसका झुकाव कुछ ज्यादा ही है , अतः पहले तिलियरगंज वाले कमला पहलवान और बाद में

कल्याणीदेवी वाले ठेकेदार अमोलकचंद की रखैल बनकर रहती है। इसके पीछे वैभवी-जीवन जीने की लालसा है।

रामकली कैसी भी हो, अपने नेग की पक्की औरत है। जिसको वह अपना मानती है, उसे छोड़कर किसी और को हाथ भी नहीं रखने देती। बसन्तलाल उसका ब्याहता पति है। बच्चों के कारण वह कभी-कभार उसके पास जाती है। एक बार वह अमोलक के यहां से आयी थी। बसन्तलाल जरा-सरा छूने की कोशिश करता है, तब उसे साफ कह देती है —

"खामखा को जी खराब मत कर अपना। मैं तो तेरे दारू मंगाने से ही समझ गई थी, तेरा इरादा नेक नहीं। पहले भी तेरी यही आदत थी। मैं लाख नशे में होऊं बसन्ता! मगर यों समझ कि जहां किसी पराये मर्द का हाथ लगा नहीं कि सारा नशा एक तरफ हो जाता है। जैसे कुत्ते को देखकर बिल्ली अपने रोयें खड़े कर लेती है। ... मैं तो उस औरत को थू समझती हूं, जो अपनी नेग नहीं निभा सके। जब तक तेरे घर में थी, कभी कहीं ऐसी-वैसी बात तूने देखी हो, तो बता तू ही? देखी थी? [61]

इस प्रकार रामकली जब जिसके साथ होती है, पूरी प्रामाणिकता से उसका निर्वाह करती है। एक बार अमोलक दो-एक लोगों को साथ लेकर आता है और उन्हें रामकली को छूने के लिए कहता है, तब रामकली बिफर उठती है, क्योंकि वह अमोलक को अपना पति मानती है। पर पति होकर जब वह इस प्रकार दलाली पर उतर आता है, तब वह उसका भी पल्ला झाड़कर खड़ी हो जाती है। यथा — " हरामी, बिना अपनी मर्जी के

तो मैंने अपने ब्याहते को भी नहीं छूने दिया , तू ससुरा कौन होता है ? " 62

इस प्रकार हम देखते हैं कि मटियानीजी की कहानियों में हमें रखिताओं के दो रूप मिलते हैं — एक तो वह जहाँ वे पुरुष-वंचना का शिकार हुई हैं और किसी विवशता से उन्हें रखिता होना पड़ा है ; और दूसरा वह जहाँ स्त्री अपने मौज-शौक और वैभव की पूर्ति हेतु इस रास्ते पर स्वयं अपनी मर्जी से चल पड़ती है ।

मिरासीनें :

वैसे तो मिरासीनें नाचने-गाने का काम करती हैं , परन्तु कभी-कभी परिस्थितिवश उन्हें शरीर का सौदा भी करना पड़ता है । "भँवरे की जात" और "सावित्री" नामक कहानियों में हमें इन मिरासीनों का परिवेश प्राप्त होता है । "सावित्री" कहानी अन्यत्र "गृहस्थी" शीर्षक से भी प्रकाशित हुई है ।

"भँवरे की जात" कहानी में म मिरासीनों के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है । पुराने जमाने की उनकी सज-धज शानो-शौकत खतम हो गई है । प्रस्तुत कहानी में चिपकुली और कुंतुली नामक दो माँ-बेटियों के माध्यम से समस्त मिरासीन-समाज पर दृष्टिपात किया गया है ।

चिपकुली का शानो-शौकत वाला जीवन , और चिपकुली से इक्कीस होने पर भी कुंतुली की पतली हालत का वर्णन , लेखक ने यथार्थतः किया है । यथा — " चिपकुली ने अपनी उमर में " बाली उमर लरकैयाँ " वाली ठुमरी से ही सोना , पीतल की

कीमत पर रहना था , मगर जब से " रायल गवर्नमेण्ट " अपने मुलुक चली गई और गांधी-सरकार हुई , तब से धरती-आसमान का अंतर पड़ गया । तीन ताल, एक ताल , और ध्रुपद-धमार तक के शास्त्रीय राग-नृत्यों और " बाली उमर सरकैया , अंधेरी है रात सजन " — जैसी ठुमरियों से लेकर ठेठ पहाड़ी तर्ज की " तीले धारो बोला , धना , डाके की गाड़ी मां " जैसी चलती चीजें गाने पर भी कुंतुली परिवार का भरण-पोषण नहीं कर पा रही थी । कुंतुली तीन-चार तबलची और सारंगिये बदलने के बाद भी अकेली ही थी । " 63

चिणकुली मिरासन अपने जमाने को याद करते हुए कहती है — " अरे , दिल की कदर तो उसी जमाने में थी । मैं सैनों से बरजती छाती पर हाथ रख लेती — " ना छेड़ो छेड़ो सैंया " और आनंद ठाकुर एक हाथ से अपना टोप संभालते हुए , दूसरे हाथ से रेशम के ब्लाउज में दस-दस के नोट ठोंस देते थे , " अब तो छेड़ूं मेरी जान " , मगर , आहा रे , आज के दरिद्दर जमाने ! वही आनंद ठाकुर मेजर बनकर पिन्शन पर आ गए , मगर तीन इंची गांधी-टोपी पहनकर घूमते हुए मेरे घर के सामने से गुजरते हैं , तो ऐसे चोर-पांवों से चलते कि मोड़ काटते ही दिखाई देते । किस का लेना और कैसा देना ! मैं तो कहती सिर्फ तांबे के पैसों में ही छेद नहीं पड़ा , लोगों के दिलों में भी छेद पड़ गया । " 64

इसी चिणकुली मिरासन को किसी जमाने में एक अंग्रेज साहब से प्रेम हो गया था । उन दिनों चिणकुली के पांव धरती पर नहीं पड़ते थे । साहब ने वादा किया था कि बच्चा होते ही वे उसे "बाय एयर " इंगलैण्ड ले जायेंगे । मगर "डिलीवरी" हो जाने पर कुछ खर्चा मांगने चिणकुली उनके "एयरफोर्स" के दफ्तर पर पहुंची , तो पहले तो उन्होंने "सोरी, एक्सक्यूज मी " कहा ,

पर चिपकुली के बहुत जिद करने पर "व्हाट नानसेन्स " कहते हुए दो-चार हण्टर जड़ दिए थे । 65

कुंतुली इसी चिपकुली मिरासन की पुत्री है । क्रमशः उसके परिवार की समस्या विकट होती चली जाती है । इल्म को ताक पर रखकर पेशा करने लगती है । पर अब अक्सर ऐसे ही लोग फंसते जो परिवार से विच्छिन्न आवारा-गर्द होते थे या कभी-कभार दूर के फौजी लोग । पर जिस प्रकार छिछला तालाब जल्दी सूखने लगता है , उस प्रकार कुंतुली जिसे भी पकड़ती , कुछ दिनों में उसके कपड़े तक के उतरने की नौबत आ जाती थी । इसलिए पंडित दुर्गादत्त कहते थे — " यारो , एक होती है कठकिड़ी ; वह छोटी-सी कठकिड़ी लकड़ी की बड़ी-बड़ी बल्लियों को कोर-कोर कर खोखला कर देती है । और यह कुंतुली हुड़क्यानी जो है , यह चम्किड़ी है । चमड़ी जैसी जिस अभागे से चिपटती , बस फिर खोक के साथ ही छूटती । " 66

रामसिंह हवलदार कश्मीर की युद्धबन्दी के समय रिलीज होकर घर लौट आया था । अलमोड़ा और रानीखेत के बीच वह ठेकेदार कुदरतसिंह का ट्रक चलाया करता था । शराब के नशे में उसने अपनी पत्नी रुक्मी को ठुकरा दिया था । एक दिन वह रुक्मी को पुनः बुला लाने की सोच रहा था कि अचानक कुंतुली उसके जीवन में आती है । बस वह कुंतुलीमय हो जाता है । सारी कमाई कुंतुली पर उड़ा देता है । कुंतुली को भी लगता है कि अच्छे दिन फिर लौट आये हैं । वह भी पेशा छोड़कर रामसिंह को चाहने लगती है । परन्तु कुंतुली को गर्भ रहता है , और ज्यों-ज्यों कुंतुली का महीना निकट आने लगता है , रामसिंह के मन में भविष्य को लेकर कई आशंकाएं उठने लगती हैं । वह सोचता है कि कुंतुली से औलाद हो गई और वह कहीं बंध गया तो फिर

तो मिराशी वंश ही चलेगा । आर्थिक समस्या भी थी , गांव की घर-गृहस्थी में तो खेती का एक अटूट आसरा रहता है । पर यहां कभी ड्राइवरी छूट गई तो तबला-सारंगी बजाने की ~~x~~ नौबत आएगी । ये सब सोचकर रामसिंह अपने गांव भाग जाता है और कहीं कुंतुली उसे ढूंढती हुई वहां न पहुंचे इस आशंका से वह रुक्मी के मायके के गांव काफली में रहने चला जाता है । पर कुंतुली उसे ढूंढते हुए वहां भी पहुंच जाती है । रामसिंह सास को दिखाने अलमोड़ा अस्पताल गया था । घर में सिर्फ रुक्मिणी थी । रुक्मिणी को देखकर कुंतुली का मन पसीज जाता है और काफली गांव से वापस लौटते हुए वह रुक्मिणी को अपनी ~~x~~ असलीयत बताते हुए कहती है — " मैं तो नाच-गाके भी जिन्दगी ठेल लूंगी , लेकिन तुम कहां तक मायके में पड़ी रहोगी । मैंने अपना दावा छोड़ा .... " ~~x~~ 67

और तब यह मिरासीन , हुड़क्यानी , छोटी-जात कहाने वाली कुंतुली , हमारी नजरों में अचानक एक मूंठ ऊपर ऊंची उठ आती है ।

"सावित्री" कहानी की मां-बेटी सावित्री और कलावती भी मिरासीनें हैं । कलावती सावित्री को अपने पेशे की बारीकियां समझाती रहती है और सावित्री भी मां की बातों को वेदवचनों की तरह लेती है , पर कहीं-न-कहीं उसमें भले घरों की बहू-बेटियों की जैसी हुड़क तो है ही । गाने-बजाने का पेशा छोड़कर , घर-गृहस्थी बसाने की ललक उसमें अक्सर प्रकट हो आती है ।

सावित्री किसी ठाकुर को चाहती है । ठाकुर की पत्नी दिवंगत हो चुकी है । बेटा ससुराल में पल रहा है । मां कलावती ठाकुर को हो सके उतना निचुड़ लेने की बात करती है । ठाकुर

कल सावित्री को मेला दिखाने के लिए लेने आ रहा है । माँ कलावती सावित्री को पढ़ाती है — ' तू ऐसा करना बेटी , ठकुरिया आएगा तो जरा जिकर कर देना कि इसके [सावित्री के भाई के] कपड़े दर्जी के यहाँ पड़े हुए हैं । कपड़े के लिए भी कह देना , बंशीलाल की दुकान से उधार लाई । मेले को जाती वक्त उधर से ही होती चली जाना । जो साड़ी तुझे खरीदनी हो , सिर्फ इतना ही कह देना कि " हाय! कितनी शानदार दिखाई दे रही है ! " — चार दिन ये ही होते इन मरदों की बन्द मुट्ठी ढीली कर लेने के , फिर तो ... फिर तो यह मरद नामकी चरड़ी भैंस कहाँ थनों को हाथ लगाने देती ? ' 68

सावित्री जब कलावती की इस प्रकार की बातें सुनती है , तो उसकी चेतना पर एक अजनबी-सा भय मंडराने लगता है । वह सोचती है कि आगे-पीछे उसे भी क्या यही भूमिका निभानी होगी ? क्या उसे भी अपनी बेटियों के आगे यही दीक्षाएँ देनी होंगी ? उसके पास भी इसी प्रकार का परंपरागत बटुवा होगा । वह भी इसी तरह पान-सुपारी और सिगरेट बाहर निकालेगी । सावित्री जब यह सोचती है तो उसे अपना भविष्य अंधकारमय नजर आता है ।

माँ उसे ठाकुर का घर धीरे-धीरे उजाड़ देने की सलाह देती है , पर सावित्री ठाकुर का घर बसाने का ठान लेती है । उसे ठाकुर की फिजूलखर्ची भी अच्छी नहीं लगती । कहानी के अंत में वह कहती है —

' आखिर खर्च करने का भी एक तरीका होता है । तुम तो सौ-सौ के नोट ऐसे निकाल देते हो , जैसे हम लोगों को आगे-

पीछे खाने वाला और कोई है ही नहीं ? और हाँ , यह तो मैं तुमसे पूछना ही भूल गई । पहली वाली दीदी का मुन्ना आखिर कब तक ननिहाल में पड़ा रहेगा दूसरे के भरोसे ? बेचारा माँ की ममता को तरसता होगा वहाँ ... मेले से लौटते ही उसको घर वापस ले आना है । अब ये-ए-ए बन्दरों की तरह क्या देख रहे हो मेरे को ? अब तक तो तुम चार-पांच बच्चों के बाप बन चुके होते ? .... अरे पूरे तीन दिनों तक मेला चलता रहता है , तो क्या यह जरूरी है कि हम भी यहीं पड़े रहें ? कितना रूपया आलतू-फालतू चीजों में खर्च हो जाता है यहाँ ? उठो , वापस चलने की तैयारी करो । मैं तुम्हारे कपड़े तह कर देती हूँ । गिरस्थी ऐसे घर-फूंक तमाशा देखने की चीज नहीं । " 69

यहाँ बताया गया है कि सावित्री मिरासीन है , पर उसके संस्कार दूसरे प्रकार के हैं । वह घर-गृहस्थी बसाकर रहना चाहती है । उसे अपने व्यवसाय से घृणा है । पुरुषों को अपने रूप-जाल में फांसकर उनसे पैसे ऐंठवाना उसे अच्छा नहीं लगता । वह ठाकुर को तहेदिल से चाहती है , और इसलिए उसका उजड़ा हुआ घर बसाना चाहती है । वह उसके बच्चे को माँ का प्यार देना भी चाहती है । इस प्रकार उसमें एक संस्कारी गृहिणी-स्त्री के लक्षण हैं ।

<u>उच्च वर्ग की महिलाएं :</u>

मटियानीजी की अनेक कहानियों में — नगरीय परिवेश की कहानियों में — उच्च वर्ग एवं वर्ण की महिलाओं का चित्रण हुआ है । यहाँ भी हमें यही तथ्य प्राप्त होता है कि अच्छे-बुरे लोग हर जगह होते हैं — लिंग , वर्ण , वर्ग , जाति , देश , प्रदेश के भेद उसे लागू नहीं होते । दूसरे यह भी है कि मनुष्य ,

मनुष्य होता है , देवी या देवता नहीं । अच्छे-से-अच्छे मनुष्य में कोई दोष हो सकता है , और बुरे-से-बुरे मनुष्य में भी कोई अच्छाई हो सकती है । यहां भी हमें नारी के दोनों रूप मिलते हैं ।

"बिट्ठल" कहानी की करसनदास झवेरी की पत्नी सोमावती, "शुक बोला" , कहानी की "कल्पना देसाई , "दैट माय फादर बालजी" की मैडम क्रिस्ताना तथा निवेदा , "बिट्ठल" तथा "जिसकी जरूरत नहीं थी" कहानी की पारसी महिलाएं आदि ऐसे नारी-पात्र हैं जो या तो विपुल वासना से परिचालित होते हैं या अतृप्त वासना की पूर्ति के लिए अनैतिक मार्ग अपनाते हैं ।

दूसरी ओर नारी का करूणा , ममता , प्रेम आदि गुणों से आप्लावित रूप भी मिलता है । "आदि और अन्त" कहानी का नायक , उसकी नायिका शैल को पत्र में लिखता है — " नारी के रूप में जो मां बनकर अपने वक्ष के अमृत से हमारे जीवन-अंकुर को सींचती है । बहन बनकर राखी के पवित्र धागों से हमारे जीवन के चारों ओर स्नेह का जाल बुन देती है , और पत्नी बनकर , घर को स्वर्ग-सा बनाती है । और जब हम उसके मातृत्व को कुचल कर उसे वेश्या बना डालते हैं , तब भी , वह समाज के सारे कुष्ठ को अपने आंचल में समेट लेती है । " 70

"मिसेज ग्रीनवुड" , "पापमुक्ति" , "सुहागिनी" , "उत्तरापथ" , "इतिहास" , "छाक" आदि कहानियों में हमें उच्चवर्गीय नारियों के कई ऐसे रूप मिलते हैं जिनमें उक्त मानवीय गुण लबालब भरे हुए हैं ।

"छाक" कहानी के कृष्णा मास्टर गीता मास्टरनी को चाहते थे , पर पारंपरिक रूढ़ियों के कारण उससे विवाह नहीं कर

सके । उमा कृष्णा मास्टर — डा. किशन — की ब्याहता पत्नी है । उमा जब बीमार पड़ती है, तब गीता मास्टरनी उसकी जी-जान से सेवा करती है । उसी गीता मास्टरनी का निधन हो गया है । किशनजी चाहते हैं कि गीता के लिए "छाक" छोड़ा जाये, पर पत्नी को यह बात कैसे कहें उस उधेड़बुन में हैं । जब कोई अपनी रिश्तेदारी का — खून के रिश्ते का — मरता है, तब एक वक्त का खाना छोड़ा जाता है, उसे "छाक छोड़ना" कहते हैं । [71] उमा पति की परेशानी को समझते हुए कहती है —

" उन बेचारी ने तब जानें कितनी रातें मेरे लिए जागते काटीं । मैं क्या उनके लिए एक वक्त छाक भी नहीं छोड़ सकती थी ? चलो, चलें अब भीतर । मैं जानती हूं तुमने भी कहीं कुछ नहीं खाया-पिया होगा । " [72]

यहां गीता किशनजी की पूर्व-प्रेमिका है, परंतु उमा के मन में उसके लिए किसी प्रकार का कोई "सौतिया डाह" नहीं है ।

इसी प्रकार "इतिहास" और "उत्तरापथ" में जो उच्चवर्गीय और उच्चवर्णीय नारी-पात्र आए हैं, वे भी माया-ममता, करुणा और उदारता की दृष्टि से स्पृहणीय हैं ।

दलित वर्ग की महिलाएं :

नगरीय परिवेश की कहानियों में भी अनेक स्थानों पर दलित वर्ग की महिलाओं का चित्रण उपलब्ध होता है । इन कहानियों में "रहमतुल्ला", " आकाश कितना अनंत है ", "गोपुली गफुरन ", " चील", "प्यास", "इक्कू सलंग", "भय", "मिट्टी", "भविष्य", "इल्लेस्वामी", "चिथड़े", "दैट माय फादर वैलजी",

"एक कोप या : दो बारी बिस्किट" , "पत्थर" , "महाभोज" , "अहिंसा" आदि को रेखांकित किया जा सकता है । इन कहानियों में निरूपित दलित वर्ग की महिलाओं का चित्रण पूर्ववर्ती पृष्ठों में एकाधिक बार हुआ है , और उनमें जो विशिष्ट नारी चरित्र हैं , उनका विश्लेषण पंचम अध्याय में होने वाला है , अतः यहां केवल उनका उल्लेख-भर हुआ है ।

अन्य नारी-चरित्र :

मटियानीजी के नारी-चरित्रों में महतारियों - माताओं , पत्नियों , बहनों , प्रेमिकाओं का चित्रण उनके यथार्थ रूप में हुआ है । विशेषतः माताओं और बहनों का चित्रण जहां हुआ है , वहां उन-उन पात्रों के प्रति लेखक की श्रद्धा और आदर और स्नेह को रेखांकित किया जा सकता है । माताएँ चाहे वे किसी भी वर्ग की हों — उनमें ममता और वात्सल्य का समंदर ठाठें मारता हुआ दृष्टिगोचर होता है । "इतिहास" , "उत्तरापथ" आदि कहानियों में हमें उच्च-वर्ग की माताओं के ममतामय स्पर्श का अनुभव होता है ; तो "प्यास" , "मिट्टी" , "चील" , "महाभोज" , "अहिंसा" प्रभृति कहानियों में हमें निम्न वर्ग की माताओं की वात्सल्यमय पीड़ा का अनुभव होता है । "प्यास" कहानी की कृष्णाबाई यों तो भिखारिन है , पर उसका हृदय एक माँ का हृदय है । बच्चों वाली भिखारिनों को ज्यादा भीख मिलती है , अतः वह मामा पांडुरंग से एक बच्चा तो खरीद लाती है , पर उसी बच्चे को बचाने के लिए वह स्वयं रेल से कट मरती है । "मिट्टी" कहानी की गनेशी अपने बच्चों को पालने-पोसनेके लिए लालमन नामक कोढ़ी की गाड़ी ढोती है । "अहिंसा" और "महाभोज" में भी इसी प्रकार की महतारियों को चित्रित किया गया है ।

"प्रेरणा की पूंजी " , "आदि और अन्त" , " एक कोप या : दो खारी बिस्किट " , "झल्लेस्वामी" , "इक्कू मलंग" आदि कहानियों में लेखक ने बहन के स्नेह और ममता का आलेखन किया है ।

" प्रेरणा की पूंजी" की अनु कथा-नायक वीरेन की मानी हुई बहन भी है और भाभी भी । वीरेन अनु को बहुत चाहता है । वीरेन प्रतिभाशाली है । कवि और लेखक है । परंतु उसकी माली हालत ठीक नहीं है । जितेन्द्र, वीरेन का मित्र , और अनु का पति वीरेन की सहायता करना चाहता है । अनु भी चाहती है । परंतु वीरेन की खुददारी को यह मंजूर नहीं है । अतः वीरेन जितेन्द्र से कहता है — " मैं आपके पास से बहुत कुछ ले जा रहा हूं , भैया । जिसके स्नेह का स्पर्श पाकर आज सहसा मेरे जीवन में एक तूफान-सा आ गया है , उसकी आंखों के आंसुओं को हाठों की मुस्कराहट में बदल सकूं — इसके लिए अब सतत प्रयत्न करूंगा । और भैया । शायद प्रेरणा की यह पूंजी इन रूपयों से कहीं ज्यादा कीमत रखती है । " 73

उक्त कथन से कथा-नायक वीरेन अपनी बहन और भाभी अनु को कितना चाहता है , यह तो सिद्ध होता ही है , परंतु यह भी ध्वनित होता है कि अनु अपने भाई और देवर को कितना प्यार करती है ।

"आदि और अन्त" कहानी में कहानी-नायक देवेश पांडेय की अपनी बहन के प्रति जो ललक है , उसे अभिव्यक्त किया गया है । प्रकारान्तर से यह ललक और लाचारी स्वयं लेखक की भी रही है । यथा — " एक बहन की .... कुछ ही वर्ष पूर्व उसका ब्याह हुआ , लेकिन , मैं उसे स्नेहाशीष भी नहीं भेज सका । .... नहीं भेज सका , इसलिए , कि इन ब्याह आदि संस्कारों में

आशीर्वाद भी बड़े महंगे पड़ते हैं । उनका मूल्यांकन आशीर्वाद के लिए उठे हुए हाथ में थमे रूपए या रत्नाभरणों की तुला पर होता है । ... और मेरे पास तो , एक धोती भेजने की क्षमता भी नहीं थी । जिस दिन बहिन के ब्याह की खबर लगी थी मुझे , उस दिन मेरे पास पूंजी के नाम पर , एक मोटी तन्दूरी रोटी थी । बस , सिर्फ एक तन्दूरी रोटी , जिसे मैंने जामा मस्जिद के पास खैरात में पाया था । " 74

"एक कोप या : दो खारी बिस्किट " का रामन्ना दुअन्नी के बदले में नसीम को प्यार करना चाहता है । परंतु अचानक उसे अपनी बहन करावा की याद आ जाती है और वह नसीम को अपनी बहिन बना लेता है । रामन्ना की बहन करावा को पेट की आग बुझाने के लिए अस्मत का सौदा करना पड़ता है । एक दिन इस बात को लेकर उसकी रामन्ना से झड़प हो जाती है , तब वह रामन्ना के मुंह पर थूंकती है और कहती है —

"दुनिया वाले मुझ पर थूंकते होंगे , लेकिन मैं तुम्हारे मुंह पर थूंकती हूं , कि तुम्हारे जैसा भैंस-हाथी [illegible] सरीखा भाई होकर भी मुझे रोटियों के लिए तन का सौदा करना पड़ता है , मन का खून करना पड़ता है ... । " 75

और ऐसा कहते हुए नागपुर एक्सप्रेस से कटकर वह मर गई थी । करावा की स्मृति आने पर रामन्ना सोचता है — " और यह नसीम ? इसका भी कोई मुझ जैसा ही निकम्मा भाई होगा । वह तो कहती थी , ' अगर मेरा भी कोई भाई होता ' ... पण बावली है ... उसे नहीं मालूम आज के जमाने में हम गरीबों के लिए भाई-बहन के , मां-बेटे के पवित्र नाते कुत्ते की रोटियां हो गई हैं और यह नसीम ... मेरी सिस्टर करावा ... " 76

"इल्लेस्वामी" कहानी का इल्लेस्वामी होरमसजी सेठ की सुपारी लेकर एक मराठी घाटन लड़की को उठा तो लाता है, पर उसकी कहानी सुनने पर उसे अपनी बहन यनम्मा की स्मृति हो आती है, जो नन्हे स्वामी के लिए भीख मांगा करती थी, और भीख मांगते- मांगते ही खिलखिलाती धूप में उसने दम तोड़ दिया था। "इब्बू मलंग" कहानी का इबादत हुसैन एक वेश्या के पास जाता है। बाद में उसे पता चलता है कि वह वेश्या उसकी चचाजाद बहन सईदन थी। इबादत को सिफीलिस हुआ था। वह यह रोग सईदन में संक्रमित कर देता है। उसी रोग में सईदन मर जाती है। इबादत हुसैन कसम खाता है कि अब वह किसी औरत के पास नहीं जाएगा।

इसी प्रकार पत्नियों और प्रेमिकाओं के भी कई चरित्र मटियानीजी की कहानियों में उपलब्ध होते हैं। इनमें स्त्री के दोनों रूप मिलते हैं -- बावफा और बेवफा। "अहिंसा" बिन्दा तथा "महाभोज" की शिवरति बावफा पत्नियों के उदाहरण हैं, तो "चुनाव" कहानी की कमला शिल्पकारनी बेवफा प्रेमिका सिद्ध होती है। "मिसेज ग्रीनवुड" में हमें बेवफाई और वफादारी का अद्भुत सम्मिश्रण मिलता है। "छाक" की गीता मास्टरनी जहां एक आदर्श प्रेमिका है, वहां उस कहानी की उमा एक आदर्श पत्नी है। इनमें कुछ स्त्रियां ऐसी भी हैं जो पुरुष-वंचना की शिकार हैं, जैसे "आकाश कितना अनंत है" की जसवन्ती, "भदरे की जात" की कुंतुली और चिणकुली; तो कुछ नारियां ऐसी भी हैं जो नारी-वंचना के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, जैसे "चुनाव" की कमला शिल्पकारनी, "नाबालिग" की आनंदी आदि।

निष्कर्ष :

अध्याय के समग्रावलोकन से हम निम्नलिखित निष्कर्षों

तक पहुंच सकते हैं :—

§1§ मटियानीजी की नगरीय परिवेश की कहानियों में भी हमें उनकी ग्रामभित्तीय कहानियों की भांति नारी के विविध रूप उपलब्ध होते हैं । उनके अनुभव और लेखन का दायरा विस्तृत है ।

§2§ इसमें हमें परिवेशगत वैभिन्य मिलता है । हिन्दू, मुस्लिम , पारसी , ईसाई , मराठी , दक्खणी आदि परिवेश की महिलाओं का यथार्थ आकलन यहां हुआ है ।

§3§ इनमें नारियों का एक वर्ग है जो भिखारिनों , वेश्याओं, रखैलों और मिरासीनों से आवृत्त हैं । इनका चित्रण लेखक ने मानवीय संस्पर्श और संवेदना के साथ किया है ।

§4§ लेखक ने उच्चवर्ग तथा दलित वर्ग की महिलाओं का चित्रण कलागत निरपेक्षता के साथ किया है ।

§5§ मटियानीजी के एतद्‌विषयक लेखन में समग्रता के दर्शन होते हैं । उन्होंने नारी के दोनों रूपों का सम्यक् आलेखन किया है ।

:: सन्दर्भानुक्रम ::

§1§ जिसकी जरूरत नहीं थी : मेरी तैंतीस कहानियाँ : पृ. 19 ।

§2§ वही : वही : पृ. 20 ।

§3§ बिट्ठल : मे.तैं.क. : पृ. 79 ।

§4§ वही : वही : पृ. 80 ।

§5§ प्यास : त्रिज्या : पृ. 115-116 ।

§6§ दैट माय फादर बालजी : मे.तैं.क. : पृ. 70-71 ।

§7§ बिट्ठल : मे.तैं.क. : पृ. 74 ।

§8§ द्रष्टव्य : शुक बोला : मे.तैं.क. : पृ. 60-62 ।

§9§ भावना की सत्ता : मे.तैं.क. : पृ. 4 ।

§10§ दैट माय फादर बालजी : मे.तैं.क. : पृ. 73 ।

§11§ वही : वही : पृ. 72 ।

§12§ झल्लेस्वामी : मे.तैं.क. : पृ. 15 ।

§13§ वही : वही : पृ. 16 ।

§14§ इब्बू मलंग : चील : पृ. 49 ।

§15§ वही : वही : पृ. 50 ।

§16§ द्रष्टव्य : प्यास : त्रिज्या : पृ. 118-119 ।

§17§ वही : वही : पृ. 117 ।

§18§ वही : वही : पृ. 119 ।

§19§ मैमूद : भविष्य तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 73-74 ।

§20§ वही : वही : पृ. 74-75 ।

§21§ वही : वही : पृ. 83 ।

§22§ रहमतुल्ला : भ.त.अ.क. : पृ. 96-97 ।

§23§ वही : वही : पृ. 90 ।

§24§ पत्थर : मेरी तैंतीस कहानियाँ : पृ. 145 ।

§25§ गोपुली गफूरन : पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 51 ।

§26§ वही : वही : पृ. 51 ।

§27§ वही : बर्फ की चट्टानें : पृ. 179 ।

§28§ वही : वही : पृ. 186 ।

§29§ मिसेज ग्रीनवुड : बर्फ की चट्टानें : पृ. 412 ।

§30§ वही : वही : पृ. 415 ।

§31§ वही : वही : पृ. 416 ।

§32§ द्रष्टव्य : झुरमुट : ब.च. : पृ. 248 ।

§33§ वही : वही : पृ. 254 ।

§34§ वही : वही : पृ. 256 ।

§35§ वही : वही : पृ. 256 ।

§36§ चुनाव : ब.च. : पृ. 427 ।

§37§ दो दुखों का एक सुख : ब.च. : पृ. 526 ।

§38§ वही : वही : पृ. 526 ।

§39§ वही : वही : पृ. 545 ।

§40§ द्रष्टव्य : प्यास : त्रिज्या : पृ. 118 ।

§41§ द्रष्टव्य : वही : वही : पृ. 119 ।

§42§ द्रष्टव्य : वही : वही : पृ. 119 ।

§43§ वही : वही : पृ. 121 ।

§44§ मिट्टी : त्रिज्या : पृ. 174 ।

§45§ वही : वही : पृ. 176 ।

§46§ वही : वही : पृ. 180 ।

§47§ इल्लेस्वामी : मेरी तैंतीस कहानियां : पृ. 15 ।

§48§ वही : वही : पृ. 15 ।

§49§ जिसकी जरूरत नहीं थी : मे.तैं.क. : पृ. 19 ।

§50§ वही : वही : पृ. 20 ।

§51§ चिथड़े : मे.तैं.क. : पृ. 37 ।

§52§ द्रष्टव्य : बिट्ठल : मे.तैं.क. : पृ. 74 ।

§53§ "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " : मे.तैं. क. : पृ.81-82

§54§ द्रष्टव्य : वही : वही : पृ. 82 ।

§55§ द्रष्टव्य : वही : वही : पृ. 82 ।

§56§ वही : वही : पृ. 84 ।

§57§ वही : वही : पृ. 87 ।

§58§ बत्तीस दाँतों को टकराने वाला सेव : मे.तैं.क. : पृ. 172 ।

§59§ द्रष्टव्य : इब्बू मलंग : त्रिज्या : पृ. 145 ।

§60§ वही : वही : पृ. 145 ।

§61§ शरण्य की ओर : भेड़ें और गड़रिये : पृ. 80 ।

§62§ वही : वही : पृ. 86 ।

§63§ भँवरे की जात : ब.च. : पृ. 49 ।

§64§ वही : वही : पृ. 50 ।

§65§ द्रष्टव्य : वही : वही : पृ. 50 ।

§66§ वही : वही : पृ. 51 ।

§67§ वही : वही : पृ. 57-58 ।

§68§ सावित्री : ब.च. : पृ. 170 ।

§69§ वही : वही : पृ. 174-175 ।

§70§ आदि और अन्त : मे.तैं.क. : पृ. 68 ।

§71§ द्रष्टव्य : छाक : ब.च. : पृ. 580 ।

§72§ वही : वही : पृ. 581 ।

§73§ प्रेरणा की पूंजी : मे.तैं.क. : पृ. 53 ।

§74§ आदि और अन्त : मे.तैं.क. : पृ. 63 ।

§75§ "एक कोप चा : दो खारी बिस्किट " : मे.तैं.क. : पृ. 86 ।

§76§ वही : वही : पृ. 86 ।

§§§§§§§§§§§§